केरल हिन्दी साहित्य अकादमी शोध-पत्रिका

२ अक्तूबर २०१४ अंक, वर्ष २०, नं ६६, लक्ष्मीनगर, पट्टम पालस, तिरुवनन्तपुरम-६९५ ००४

१ अगस्त २०१४ को संपन्न डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर पुरस्कार समारोह में भारत के प्रख्यात राष्ट्रीय नेता श्री. एल.के .अड्वानी साहब डॉ.नायर जी को एक लाख रुपये सहित अनेक उपहार देते हैं। पास खडे हैं पूर्व गवरणर श्री. त्रिलोकी नाथ चतुर्वेदी, श्री. प्रदीपकुमार, डॉ.वीरेन्द्रशर्मा

केरल हिन्दी साहित्य अकादमी का ३४ वाँ वार्षिक समारोह संपन्न हुआ। मंच के प्रशस्त विद्वानों ने भाग लिया। बायें से श्रीमती राजपुष्पम, श्री तुंपमण तंकप्पन, विख्यात साहित्यकार श्री.नरेन्द्र कोहिली, श्री संतोष श्रेयांस (बिहार), श्री. पी.गोपीनाथन नायर, डॉ.नायर, डॉ.तंकमणिअम्मा, पीछे डॉ.पंडित बन्ने, डॉ.रज़िया बीगम (मद्रास) डॉ.षणमुखम, डॉ.लीना।

डॉ. चन्द्रशेखरन नायर का नवति आचरण एरणाकुलम
रामकृष्ण आश्रम में धूम-धाम से चला। समारोह का उद्‌घाटन
किया था जस्टिस एम.आर हरिहरन नायर जी ने।

बि.जे.पी. नेता श्री. एल.के .अद्वानी जी और डॉ.एन.चन्द्रशेखरन
नायर जी दोनों हिन्दी रत्न पुरस्कार के सन्दर्भ में, दिल्ली में।

डॉ. चन्द्रशेखरन नायर जी को अंगवस्त्र पहनाकर
उनका आदर करते हैं तालूक यूनियन
प्रसिडेंड श्री. संगीत कुमार जी।

१५-११-२०१४ को तिरुवनन्तपुरम केशवदासपुरम करयोग का शतवर्षीय
समारोह संपन्न हुआ। पुरस्कृत आदृत नायर जी कृतज्ञता ज्ञापित करते हैं।
पास बैठे हैं गाँधी स्मारक निधि चेयरमेन श्री.पी.गोपिनाथन नायर

पिछले महीने में केरल हिन्दी खादी पुरस्कार समिति का
जस्टिस राधाकृष्ण मेनन नेशनल पुरस्कार डॉ. नायरजी ने
स्वीकार किया। डॉ. नायर, सुप्रिंकोर्ट जज
श्री. वी.आर.कृष्णय्यर और केन्द्रमंत्री श्री. तोमस के साथ

राजर्षि पुरुषोत्तम से अनुबंद्धित अंगवस्त्र एवं माला पहनाते हैं
श्री एल.के .अद्वानी जी डॉ.नायर जी को।
पास ही संस्था के अध्यक्ष पूर्व राज्यपाल श्री.टी.एन.चतुर्वेदी जी।

केरल हिन्दी साहित्य अकादमी शोध-पत्रिका

२ अक्तूबर २०१४ अंक, वर्ष २०, नं ६६ लक्ष्मीनगर, पट्टम पालस, तिरुवनन्तपुरम-६९५ ००४

सम्पादक
डा० एन० चन्द्रशेखर नायर

संरक्षक
श्रीमती शांता बाई (बेंगलोर)
श्री. डी.शशांकन नायर
श्रीमती कमला पद्मगिरीश्वरन
डा० वीरेन्द्र शर्मा (दिल्ली)
डा० अमर सिंह वधान (पंजाब)
श्री. हरिहरलाल श्रीवास्तव (काशी)
श्रीमती के. तुलसी देवी (चेन्नै)
श्रीमती रजनीसिंह
डा. मिनी सामुवल
डा. सविता प्रमोद

परामर्श-मण्डल
डा० एस.तंकमणि अम्मा
डा० मणिकण्डन नायर
डा० पी.लता
श्रीमती आर. राजपुष्पम
श्रीमती श्रीदेवी एस.
श्रीमती एल. कौसल्या अम्माल
श्रीमती रमा उण्णित्तान

सम्पादकीय कार्यालय
श्रीनिकेतन, लक्ष्मीनगर,
पट्टम पालस पोस्ट
तिरुवनन्तपुरम-६९५ ००४
दूरभाष-०४७१-२५४१३५५

प्रकाशकीय कार्यालय
मुद्रित : (द्वारा)
श्रीनिकेतन, लक्ष्मीनगर,
तिरुवनन्तपुरम - ६९५ ००४
मूल्य-एक प्रति: २०.०० रुपये
आजीवन सदस्यता : १०००.००
संरक्षक : २०००.००

केरल हिन्दी साहित्य अकादमी शोध-पत्रिका कहाँ कहाँ जाती है?

कन्याकुमारी, मैसूर-२, महाराष्ट्रा, मणिपुर, मद्रास-६, कलक्कता-२, नई दिल्ली (अनेक स्थान), गुन्डूर, त्रिवेन्द्रम (अनेक जगहें), बागपत (यु.पी.) उन्नाव (उ.प्र.), बिलासपुर (म.प्र.), गुंतकल, जबलपुर, इलहाबाद, अहमदाबाद, बिरखडी, जमशेदपुर, लातूर, हैदराबाद, रतलाम, देवरिया, गाजियाबाद, इम्फाल, चुडीबाज़ार, पीली भीत, फिरोजाबाद, अम्बाला, लखनऊ, बलांगीर, बिहार, पटना, गया, बांका, ग्वालियर, भगलपुर, देवधर, जयपुर, बनारस, तृशूर, आलप्पुषा, मेरठ केन्ट, कानपुर, उज्जैन, पानीपत, होरंगाबाद, सीतामठी पोस्ट, प्रतापगढ, सरगुजा, बिजनौर, भीलवाडा, सतना, रेलमंत्रालय, तिरुवल्ला, वर्कला, कोट्टयम, नई माही, ओट्टप्पालम, चेप्पाड, लक्किडि, नेय्याट्टिनकरा, कोषिकोड, पय्यन्नूर, कोल्लम, मान्नार, मंगलोर, पुरनपुर, पंजाब, विशाखपटनम

केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय नई दिल्ली द्वारा निर्देशित जगहें :

तमिल नाडु:- अरुम्बाक्कम, तोरापक्काओ, मद्रास, चेन्नै-३२, क्रोमोपेट्टा, चेन्नै-२१, चेन्नै-२, चेन्नै-८, कान्चीपुरम, तिरुचिरापल्ली, तिरुचिरापल्ली-२, नोर्त अरकोट, ताम्बरम, कोयम्बतूर, सेलम, सेलम-२६, चेन्नै-३४, चेन्नै-२४, तिरुचिरापल्ली-२, चेन्नै-३०, कोयम्बतूर-४, चेन्नै-२८, चेन्नै-८६। **गुजरात:-** अहमदाबाद, बरोडा। **कर्नाटक:-** बांगलोर, चित्रदुर्ग, श्रीनिगेरी, मौंगलोर, मैसूर, हस्सन, मान्डीया, चिगमौंगलोर, षिमोगा, तुमकूर, कोलार। **महाराष्ट्रा:- मुम्बई,** कोलाबा-मुम्बई, मुम्बई-२०२, माटुंगा, मुम्बई-८, मुम्बई-८६, अन्देरी-६९, मुम्बई-२६, मुम्बई-८७, मुम्बई-२, औरंडगाबाद-३, औरंडगाबाद-२, औरंडगाबाद-१, नागपुर, रामटाक-नागपुर, सताना, नन्दगौन-नासिक, पूना, पूना-१, पूना-४, मानमाड-नासिक, चन्द्रपुर, अमरावती, कन्डहार, कोलहापुर, बानडरा, अकोला, नासिक, अहमदनगर, जलगौन, दुलिया, सांगली-कोलहापुर, षोलापुर, सतारा, सान्ताक्रूस, बारसी-४१३, माटुंगा, संगली-४१६। **वेस्ट बंगाल:-** कलक्कता। **हैदराबाद:-** सुल्तान बाज़ार। **गौहाटी:-** कानपुरा। **नई दिल्ली:-** आर, के पुरम। गोवा:- मपुसा-५०७।

केरल हिन्दी साहित्य अकादमी शोध-पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण संबंधित लेखक के हैं। संपादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं हैं। सम्पादक

केरल हिन्दी साहित्य अकादमी शोध-पत्रिका केरल विश्व विद्यालय से अनुमोदित पत्रिकाओं की सूची में शामिल की गयी है। (संपादक)

www.hindisahityaacademy.com

सम्पादकीय

केरल हिन्दी साहित्य अकादमी (एक लघु परिचय)

केरल हिन्दी साहित्य अकादमी अपना ३५ वाँ वार्षिकोत्सव मनाने के प्रयत्न में है। हिन्दी भाषा और उसका साहित्य तिरुवनन्तपुरम में ३५ वर्षों के पहले बिलकुल नगण्य जैसा था। साहित्य के लिए एक अकादमी की स्थापना होना तभी स्वागतार्ह है, जबकि एक भाषा में विविध विधाओं में प्रचुर साहित्य निर्मित हों और उसपर चर्चा-प्रतिचर्ताएँ हों। हिन्दी भाषा के अभ्यस्त व्यक्ति ३५ वर्षों के पूर्व त्रिवेंद्रम में बिरले ही थे। ऐसी स्थिति में त्रिवेन्द्रम में एक साहित्य अकादमी की स्थापना हिन्दी के नाम पर होना वस्तुतः साहसपूर्ण एवं आवेश की मानसिकता का विषय था।

इस नवीन संस्था का संचालक इस का सारा रहस्य जानने का प्रयत्न करता रहा और इसके उद्ग्रथन को जागरुकता के साथ देखता रहा। फलस्वरुप दो वर्षों के अन्तराल में संस्था का नाम परिषद के स्थान पर अकादमी ही घोषित किया और उसका स्वतंत्र रूप से पंजीकरण भी कर दिया। उसी वर्ष उसका उद्घाटन करा लिया। उद्घाटक ये केन्द्र मंत्री श्री.ज़ियाऊर रहमान अनसारी। वे इसके लिए त्रिवेन्द्रम पहुँचने को बाध्य थे, क्योंकि मैं (संस्था का चेयरमेन) उनके मंत्रालय की सलाहकार समिति का सदस्य था। सम्मेलन के अध्यक्ष रहे थे केरल के मुख्यमंत्री श्री.के.करुणाकरन, जो संस्था के मुख्य संरक्षक (पेट्रन) थे। उसी वर्ष से अकादमी की पुरस्कार योजना की भी शुरुआत हो गयी थी। उस प्रकार केरल हिन्दी साहित्य अकादमी भारतीय स्तर की एक प्रतिष्ठित शैक्षणिक संस्था बन गयी।

अकादमी का एक बृहद ग्रंथालय जो पहले ही था वह भी स्थाई महत्व का अंग बन गया। हिन्दी में शोधकार्य का केन्द्र बन गया। दक्षिण से रचित हिन्दी ग्रंथों पर शोध-कार्य शुरु हुआ। हिन्दीतर प्रदेश के लेखकों को ध्यान में रखकर उपपर शोध रचना की प्रमुखता दी गयी। आनन्द शंकर माधवन की रचनाओं का अनुशीलन, दक्षिण की मौलिक हिन्दी रचनाएं इत्यादि। इस प्रकार के शीर्षकों पर हमारा लक्ष्य विशेष ध्यातव्य है। यहाँ के शोधार्थी अब केरल के विविध कालेजों मे प्रोफसरी करता है।

हमारी पुरस्कार योजना का उद्देश्य सब से महत्वपूर्ण मानता पडा है। केरल में नये हिन्दी कवि, कहानीकार, नाटककार एवं उपन्यासकार बने। इस लक्ष्य में यह योजना सफल-साकार हो गयी। अकादमी ने २०० से अधिक नये साहित्यकारों को पुरस्कार दिया। कतिपय बाहरी साहित्यकार भी अकादमी से आकृष्ट हुए और उन्होंने अकादमी पर बार-बार लेख एवं कविताएं प्रकाशित कीं। अकादमी ने ऐसे बाहरी भावुक स्वजनों को भी पुरस्कृत किया है। उनमें प्रख्यातनामा साहित्यकार हैं - रामसनेहीलाल शर्मा यायावर (फिरोज़ाबाद), डॉ.जी.जे.हरजीत (बेंगलोर), डॉ.पंडितबन्ने (महाराष्ट्रा), डॉ.रज़िया बीगम (मद्रास), डॉ.सुन्दरलाल कथूरिया (दिल्ली), डॉ.ओमप्रकाश शर्मा (दिल्ली), श्री.प्रमोद पुष्कर (भोपाल), स्त्री.संतोष श्रेयांस (आरा, बिहार), श्रीमती रजनीसिंह (डिबाई उ.प्र.)

अकादमी की त्रैमासिक पत्रिका पिछले बीस वर्षों से निर्बाध चलती है। वह भारत की राष्ट्रीय पत्रिका बनी है। उसे केन्द्र सरकार का अंगीकार भी प्राप्त है। आज तक के उसमें प्रकाशित साहित्य की विविध विधाओं के आधार पर अनेक शोध-ग्रंथ तैयार हो सकते हैं। भारत भर उसके असंख्य आजीवन ग्राहक बन गये हैं।

शोध पत्रिका के कई विशेषांक भी निकले है। भारत के प्रख्यात रचनाकारों के नवीनतम साहित्य-चर्चा से संपन्न विशेषांक बार बार चर्चा एवं समर्थन के विषय बने रहेंगे। किसी खास साहित्यिक विषय पर शोधात्मक वस्तु होगी वह। साहित्य के कालविभजन में भी वह दिशा-दर्शन देगा ही।

अकादमी का वार्षिक समारोह ऐतिहासिक महत्व रखता है। देश भर के मूर्धन्य रचनाकारों, राजनैतिक नेताओं, संम्मानित-पुरस्कृत साहित्य मनीषियों लोकार्पण हेतु पधारनेवालों नवीनकाल निर्णय पर बंधित चर्चा पर आगत पंडितों के मिलन केन्द्र के रूप में उसे मानना पडेगा। वस्तुतः अकादमी के नाम पर वह उत्सव का दिन है। आगामी शोध-पत्रिका के अंक के लिए वह काफी सामग्री दे देगा।

केरल हिन्दी साहित्य अकादमी भवन, लक्ष्मी नगर, तिरुवनन्तपुरम - ६९५ ००४

आज इस अनुभव से बडा आनन्द महसूस हो रहा है कि भारत के उतरी दिशा के कई हिन्दी प्रेमी और साहित्यकार केरल हिन्दी साहित्य अकादमी की गति-विधि से तर्परता से मिल-जुलकर रहना और अकादमी के अधीन सेवामय भाव से काम करने में इच्छा प्रकट करते हैं।

भारतीय भाषा कवि सम्मेलन बीच-बीच में चलते हैं। देशीय नेताओं पर एक दिवसीय सम्मेलन चलाना भी अकादमी का मुख्य विषय है।

डॉ.चन्द्रशेखरन नायर

अध्यात्म रामायणम मलयालम अनुवाद गद्य में

यह पुस्तक जनुवरी १० को हिन्दी साहित्य अकादमी के सम्मेलन के अवसर पर मुफ्त दिया जायेगा। जो प्रति पाना चाहता है वह अपना पूरा पता सहित अध्यक्ष को ३०-१२-२०१४ तक लिखें।

श्रीमद भागवतम एकादश स्कंध का मलयालम अनुवाद अकादमी में आधे मूल्य पर मिलेगा।

मूल्य 250.00

दोनों ग्रंथों का अनुवादक है डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर

केरल के हिन्दी विद्वान का दिल्ली में सम्मान

डॉ.ओम् प्रकाश शर्मा

१ अगस्त की शाम को हिन्दी भवन, दिल्ली साहित्यकारों और हिन्दी प्रेमियों से खचाखच भरा था। इस दिन हिन्दी के प्रबल पक्षधर राजर्षि पुरुषोत्तमदास टण्डन की जयन्ती मनाई जाती है। हिन्दी भवन इस जयन्ती को साहित्यिक रीति से मनाता है अर्थात् इसके उपलक्ष्य में प्रत्येक वर्ष १ अगस्त को वह किसी अहिन्दी भाषी हिन्दी साहित्यकार को 'हिन्दी रत्न सम्मान' अर्पण कर अपनी भावना व्यक्त करता है। वर्ष २०१४ का हिन्दी रत्न सम्मान केरल के मलयालम भाषी डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर को दिया गया है। इस भव्य समारोह की अध्यक्षता वरिष्ठ राजनेता और भारत के पूर्व उप-प्रधान मंत्री श्री. लालकृष्ण अड्वाणी ने की और सान्निध्य रहा कर्नाटक के पूर्व राज्यपाल श्री. त्रिलोकीनाथ चतुर्वेदी का। सरस्वती प्रतिमा, श्री फल, माला, शाल, तथा एक लाख रुपये की राशि के द्वारा डॉ. नायर को सम्मानित किया गया। यह सम्मान देशभक्त पत्रकार तथा अनन्य हिन्दी सेवी पं॰ भीमसेन विद्यालंकार की स्मृति में आयोजित किया गया था। अन्य विशिष्ट अतिथि थे - श्री. प्रदीपकुमार (केन्द्रीय सतर्कता आयुक्त) तथा पूर्व राजदूत डॉ.वीरेन्द्रशर्मा। समृद्ध जानकारी और सुन्दरभाषा से सुसज्जित श्रीमती प्रमाजाजू की संचालन शैली अत्यन्त आकर्षक थी।

अध्यक्ष पद से बोलते हुए माननीय अड्वाणी जी ने बताया कि काफी बड़े होने तक भी उन्हें हिन्दी लिखनी-पढ़नी नहीं आती थी। उन्होंने कहा - 'मेरी सारी शिक्षा-दीक्षा अंग्रेज़ी माध्यम से थी। अतः मैं या तो अंग्रेज़ी जानता था या अपनी मातृभाषा सिंधी। आरम्भ में महाभारत जैसे ग्रंथ भी मैंने सिंधी में ही पढ़ें। जब भारत स्वतंत्र हुआ तो मैंने हिन्दी की पढ़ाई की शुरुआत अपनी छोटी बहन से क ख ग सीख कर की। मेरे हिन्दी सीखने में फिल्मों की भी बड़ी भूमिका थी। बाद में तो मेरे लगभग सारे व्यवहार की भाषा हिन्दी ही हो गई। नायरजी के साथ-साथ मेरा सम्मान भी इस अर्थ में हो गया कि हम दोनों की मातृभाषा हिन्दी नहीं थी तो भी दोनों को हिन्दी से आयुभर का लगाव हो गया'। श्री त्रिलोकी नाथ चतुर्वेदीजी ने बताया कि कर्नाटक के साथ-साथ कुछ समय के लिए उन्हें केरल के राज्यपाल का दायित्व भी सम्भालना पड़ा। उस दौरान उन्हें जानकारी मिली की श्रीचन्द्रशेखरन नायर ने हिन्दी में कई पुस्तकें लिखी हैं। श्री. प्रदीपकुमार ने कहा कि घर में उनकी माताजी हिन्दी की धार्मिक पुस्तकें पढ़ा करती थीं। घर में भजन आदि भी होते थे। इन सबका प्रभाव मुझ पर पड़ा। आई.ए.एस. बन कर हरियाणा में सेवा की तो वहाँ के सरकारी काम काज में भी हिन्दी का प्रयोग होता था। डॉ.वीरेन्द्रशर्मा ने आह्वान किया कि हिन्दी प्रयोग के प्रयत्न और व्यापक और सघन होने चाहिए ताकि वह विश्वभाषा बन सके।

अपने लिखित बक्तव्य में डॉ.नायर ने कहा कि गाँधी जी के दक्षिणा में हिन्दी फैलाने के सन्देश को उन्होंने अपने जीवन का मूलमंत्र बना लिया। उन्होंने मात्र सोलह वर्ष की आयु में हिन्दी प्रचारक से अपना जीवन आरम्भ किया। बाद में विधिवत् अध्ययन कर एम.ए.पीएच.डी. की उपाधियाँ आर्जित की। कॉलिज में प्रध्यापक के रूप में सेवा करते-करते अन्ततः यू.जी.सी.के. प्रोफसर एमरिट्स के पद से १९८९ में अवकाश ग्रहण किया। उन्होंने कविता, निबन्ध, कहानी, नाटक, आलोचना, जीवनी आदि लगभग हर विधा में सृजनात्मक लेखन किया है। केरल में हिन्दी साहित्य का एक बृहत-इतिहास लिखा। मातृभाषा मलयालम में भी लेखन किया और हिन्दी के अनेक प्रसिद्ध ग्रंथों का मलयालम में अनुवाद किया। हाल ही में उन्होंने एक त्रिभाषी कोश-हिन्दी-मलयालम-अंग्रेज़ी तैयार किया है जो फिल्हाल प्रकाशन के क्रम में है। हिन्दी में मौलिक लेखन के रूप में जी रचनाएं दी उनमें 'कुरुक्षेत्र जागता है', 'देवयानी', 'कविता देशभक्ति की', 'चिरंजीव महाकाव्य', 'गाँधीजी-भारत के प्रतीक', 'भारतीय साहित्य और कलाएं', 'एक कर्मयोगी की आत्मकथा' तथा 'द्विवेणी', प्रसिद्ध हैं। कइयों को पुरस्कार भी मिला है। कई रचनाएं देश के विभिन्न पाठ्यक्रमों में निर्धारित हैं। अनेक पुरस्कार-सम्मान प्राप्त करने वाला यह साहित्यकार ९१ वर्ष की आयु में भी सक्रिय है। अनेक वर्षों से ये हिन्दी साहित्य अकादमी, तिरुवनन्तपुरम के अध्यक्ष हैं और अकादमी की शोध पत्रिका का संपादन कर रहे हैं। उनके साहित्य पर कई

स्वतंत्रता सेनानी स्व. पं. गयाप्रसाद शर्मा की स्मृति एवं काव्य-गोष्ठी

डॉ.रामसनेही लाल शर्मा

फिरोजाबाद-२३, जनवरी, स्वतंत्रता सेनानी एवं षष्ट्रीय ढोलागायक में एक भव्य-आयोजन गतिशील साहित्यिक संस्था 'मनीषा' ने शिवम् होटल में किया, जिसमें फिरोजाबाद जनपद के एक भाग जीवित १०० वर्षीय स्वतंत्रता सेनानी कालीचरण गुप्त एवं समाज सेवियों को सम्मानित किया गया।

कार्यक्रम अध्यक्ष डॉ.मक्खनलाल पाराशर, मुख्य अतिथि अपर जिला एवं सत्र न्यायाधीश श्री.एस.एस.यादव, मुख्य वक्ता डॉ.अशोक तिवारी, अभिनन्दनीय व्यक्ति कालीचरण गुप्त, डॉ. रमाशंकर सिंह नेत्र रोग विशेषज्ञ, एवं पवनकुमार अग्रवाल सी.ए.के द्वारा माँ सरस्वती एवं स्व. पं. गयाप्रसाद शर्मा के चित्रों पर माल्यार्पण एवं दीप-प्रज्ज्वलन के साथ प्रारंभ हुए कार्यक्रम में सरस्वती-वन्दना श्री.यशपाल यश ने की। पंडत जी के बड़े पुत्र डॉ.रामसनेहीलाल शर्मा यायावर ने कार्यक्रम की रुपरेखा प्रस्तुत की। डॉ.रामसिंह शर्मा, रविदत्त शर्मा, चक्रेश जैन उ.प्र. रत्न एवं बालकृष्ण गुप्त उ.प्र. रत्न ने पंडित जी से संबंधित भावुकतापूर्ण संस्मरण प्रस्तुत किए। पंडित जी के पौत्र डॉ.के.के.भारद्वाज ने पंडित जी को भावुकता के साथ स्मरण किया और पंडित जी के छोटे पुत्र डॉ.श्यामसनेहीलाल शर्मा ने पंडित जी द्वारा गाये गये ढोला की पृष्ठभूमि, सास्कृतिक स्वरुप व उसके छन्द-विधान पर प्रकाश डाला। एकमात्र जीवित स्वतन्त्रता सेनानी श्री. कालीचरण गुप्त एवं डॉ. रमाशंकर सिंह तथा पवनकुमार अग्रवाल का रुद्राक्ष की माला, शॉल, दुपट्टा, भेंट व पुस्तकों को समर्पित कर सम्मान पंडित जी के पुत्रों व पौत्रों ने किया। काव्य-गोष्ठी में यशपाल, कृष्णकुमार यादव 'कनक', ओमप्रकाश उपाध्याय 'मधुर', राकेश बाबू 'ताबिश' दिनेश दिनकर, एस.एस.यादव अपर जिला एवं सत्र न्यायाधीश, जे.एस.यादव बेसिक शिक्षा अधिकारी, डॉ.ए.बी.चौबे तथा डा.ओमपाल सिंह 'निडर' आदि ने अपनी सरस व हृदयग्राही रचनाओं का काव्य-पाठ किया। नगर के गणमान्य जन रमेशचन्द्र शर्मा, डा.हुकल सिंह, मानसिंह शर्मा, डॉ.आर.बी.शर्मा, रामलखन सिंह चन्द्रौल अपर जिला एवं सत्र न्यायाधीश फिरोजाबाद, प्रकाशचन्द्र चतुर्वेदी एडवोकोट, रामनिवास गुप्त, पं.सियाराम शर्मा, राकेशचन्द्र मिश्र एडवोकेट, श्रीमती पद्मेश श्रीवास्तव, रुपेश बंसल, श्रीमती शीलमणि शर्मा, श्रीमती सीमा रानी, श्रीमती प्रीती एवं श्रीमती कल्पना श्रोतिय आदित्य प्रकाश अतुल, आदि की उपस्थिति ने कार्यक्रम को गरिमापूर्ण बनाया। कार्यक्रम का संचालन मनीषा-सचिव डॉ.सुन्दरवीर सिंह एवं धन्यवाद-ज्ञापन मनीषा अध्यक्ष श्री.प्रमोद दुबे द्वारा किया गया।

यायावर, डी.लिट, ८६, तिलकनगर, बाईपासरोड, फीरोजाबाद-२८३२०३,

केरल के हिन्दी विद्वान का दिल्ली में सम्मान...

विश्वविद्यालयों में शोध-कार्य चल रहा है। बड़ौत के डॉ.नत्थन सिंह ने केरल के प्रेमचन्द नाम से इन की जीवनी लिखी है जो उत्तर प्रदेश सरकार से पुरस्कृत हो चुकी है। डॉ, नायर शौकिया तौर पर चित्रकला का अभ्यास करते रहे हैं। 'द्रौपदी' नाम से बनाए गए चित्र का फोटो इन्होंने सार्वजनिक रुप से दिखाते हुए कहा कि मौजूदा हालात में हिन्दी ही द्रोपदी की नियति झेल रही है।

सभा में कई गण्य-माण्य नागरिक, अनेक प्रसिद्ध-अप्रसिद्ध कवि, लेखक, पत्रकार तथा हिन्दी प्रेमी उपस्थित थे। धन्यवाद, हिन्दी भवन के महासचिव डॉ.गोविन्द व्यास ने प्रस्तुत किया। उनके द्वारा यह सूचना भी दी गई कि हिन्दी भवन में साहित्यकारोकं के आतिथ्य हेतु-एक साहित्यकार सदन प्रसिद्ध बिल्डर श्री गौड़ की देख-रेख में बनाया जा रहा है। सुविज्ञ आर्किटेक्ट के रुप में श्री गौड़ बिना किसी शुल्क के शुद्ध साहित्य-सेवा भाव से यह कार्य कर रहे हैं। इस पुनीत कार्य के लिए सभा ने करतल ध्वनि से उनका अभिनन्दन किया। समृद्ध जानकारी और सुन्दर भाषा से सुसज्जित संचालिका प्रभा जाजू की शैली अत्यन्त आकर्षक थी।

प्रकाश, सी.४बी/११०, (पॉरेट-१३), जनकपुरी, नई दिल्ली-११००५८, दूर.२५५९८७९९

डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर की कहानियों में सामाजिक एवं सांस्कृतिक दृष्टि

प्रो.डॉ.पंडित बन्ने

डॉ.नायर जी अहिंदी भाषी है। लेकिन हिन्दी भाषा तथा साहित्य की प्राणधारा को उन्होंने गहराई से आत्मसात किया है। भारतीय संस्कृति के प्रति उनके मन में गहरी आस्था है। ड़ॉ.नायर जी का कथा साहित्य एक निश्चित उद्देश्य लिए पाठकों में भारतीय संस्कृति की गूँज स्पंदित करने में प्रयासरत है। साहित्य और कला दोनों की धुरी में भारतीय संस्कृति के पहिये लगाकर डॉ.नायर जी ने आदर्शमय जीवन को गति देने का उदार यत्न किया है। उनके साहित्य की सबसे बड़ी विशेषता है भारत की आध्यात्मिक परंपरा एवं चिरंतन मानवीय मूल्यों का वैज्ञानिक युग की पृष्ठभूमि है प्रतिस्थापना। भारतीय चिर पुरातन संस्कृति के महान आदर्श, त्यागमय भोग, नारी की दिव्यता, अनेकता में एकता आदि उनके साहित्य में अनुस्यूत है। पौराणिक पात्रों के साथ-साथ आम व्यक्ति के यथार्थ जीवन को भी डॉ.नायर जी ने अपने साहित्य का अंग बनाया है। कहानीकार नायर जी काफी आशावादी प्रतीत है। साथ ही सामाजिक संदभों के द्रष्टा भी है। हमारी संस्कृति की समाज सापेक्ष्य यथार्थ समसायिकता के आधार पर उन्होंने कहानियों के द्वारा स्पष्ट किया है।

'हार की जीत' कहानी का मायादेवी भारतीय आदर्शों की प्रतिमूर्ति है। भारतीय नारी के व्यक्तित्व के उजागर करनेवाली मायादेवी अपने व्यक्तित्व की गरिमा से अपनी हार को जीत में परिणत कर देती है। अपनी पत्नी मायादेवी को कवि सुश्री की कविताओं की ओर विशेषतः उन्मुख देखकर उनका मन शंकाग्रस्त हो उठता है। अपनी पत्नी से बिना कुछ कहे उसे छोडकर चला जाता है। राजा द्वारा की गई अग्नि परीक्षा में रानी सफल होकर अपनी प्रतिष्ठा को प्रमाणित करती है जो भारतीय नारी की पहचान है। पति के प्रति उसकी निष्ठा उसके कथन से व्यक्त है - "महाराज तो मेरे लिए परमेश्वर सदृश्य है। इस उम्र में उनके उनके अतिरिक्त और किसी की छाया तक मेरे हृदय में नहीं पड़ी है। पुण्य से ही वे मुझे प्राणनाथ के रूप में मिल गये पर आज वह अस्वस्थ हैं, यह मैं कैसे देख सकूँगी"। (हार की जीत-डॉ.नायर, पृ.२८-२९)

इस अग्नि परीक्षा में रानी सफल होकर अपनी पतिनिष्ठा को प्रमाणित करती है। प्रत्येक पुरुष की इच्छा होती है कि उसकी पत्नी पतिव्रता हो जो कदाचित संस्कृति के अनुरूप ही है। रानी पतिनिष्ठा उसकी हार की जीत में परिणत कर देती है। आदर्श नारी का आदर्श रूप मायादेवी के माद्यम से कहानीकार ने चित्रित किया है।

'कान्ह गायब हो गया' कहानी का लता वयस्क होती नवयुवती का चरित्र है। मातृहीन पुत्री को कलाकार पिता आनंद लाड़-प्यार से पालता है वही समाज के पाखंडी पुजारी मंदिर जैसे पवित्र पावन तीर्थ पर उसे छेड़ने का प्रयास करते हैं। बेटी की मनोदशा देख पिता आनंद कुछ-कुछ अनुमान लगा लेता है और धर्म के ठेकदारों के इस अनुचित व्यवहार पर क्रोध से भर जाता है। धर्म के ठेकेदारों के अनाचार को सभी भक्तों के समक्ष प्रस्तुत कर अपने जीवन में व्याप्त वेदना को हल्का कर धीरे-धीरे अपनी बेटी के सुखमय भविष्य की चिंता में वह कलाकार बाप अपनी कुटिया में लौट आता है। यहां धार्मिक भ्रष्टाचार का पर्दापाश करना कहानीकार का उद्देश्य रहा है। डॉ.नायर कहानी के माध्यम से नारी की सुरक्षा पर इसमें विचार किया गया है।

'चमार की बेटी' कहानी में भारतीय समाज की एक ज्वलंत समस्या अनमेल विवाह का चित्रण है। पंद्रह साल की अल्हड़ किशोरी प्रतिभाशाली कुंती को उसका पिता दहेज न दे सकने के कारण एक बूढ़े से शादी करने की विवशता है। अपने सामने कोई मार्ग न होने पर कुंती अपनी अदम्य इच्छाओं को तजकर गंगा की पवित्रता में लीन हो जाती है। कहानीकार ने घर और समाज में नारी की बुरी हालत को प्रस्तुत करने का प्रयास किया है।

'भवोति अम्मा' कहानी का नारी पात्र भवोति अम्मा है। कहानीकार उद्देश्य इस नायिका का रेखाचित्र खींचना नहीं है, पाठचकों का उसके बाहरी रूप को भेदकर अंतरंग में स्थित वेदना, ममता आदि के परिचय कराना है। पतिविहीन भवोति अम्मा स्वाभिमानी है जो दूसरे के सम्मुख हाथ पसारने को तैयार नहीं है। अपने बच्चों को गाली देना तथा मारना-पीटना उसके नित्य क्रम में शामिल है। भवोति अम्मा का यह विकृत रूप समाज की ही देन

है। समाज ने कभी उसकी विपन्नता पर तरस नहीं खाया और चार पितृहीन बच्चों की माँ निराशा और अभावों में जीवन जिती रही। उसकी बाहरी विकृतियां उसके भग्न हृदय से ही उद्भूत है। वोट माँगने आये नेताओं से कहती है - "अरे भाई तुम लोग क्यों मारे-मारे फिर रहे हो? तुम्हें वोट चाहिए? किसके लिए? खूब रहा? मेरा वोट पाकर तुम शासन खूब कर चुके हैं। आए हो, शरम नहीं आयी तुम्हें। मेरे दो बच्चे भूख से तड़प-तड़प कर मरे तब किसी कुत्ते को इस ओर झांकते नहीं पाया। मैंने अकेले अपने बच्चों को दफना दिया"। (भवोति अम्मे, पृ.३१) कहानीकार की दृष्टि में अपराधी वह समाज और शासन है जिसने मानव को भूख और क्षोभ से मुक्त करने का कोई प्रयास नहीं किया है।

'अजन्ता का कलाकार' कहानी में कुलीन वर्ग की नारी और एक गरीब चित्रकार के बीच में जो वर्ग संघर्ष है, इसका चित्रण हुआ है। सवर्ण जाति में जन्मी राजलक्ष्मी के मन में अजन्ता के चित्रकार के प्रति सम्मान की भावना है, लेकिन उस चित्रकार के चित्रों के प्रति जो प्यार है, उससे ऊपरी दृष्टि से अपवित्रता का संकल्प खत्म हो चुका है। कहानी के अंत में जातीयता अपना भयंकर रुप धारण कर लेता है। राजलक्ष्मी को छूने की चित्रकार की अदम्य चाह के आगे प्रतिबंध स्वरूप सवर्ण युवती की अहं एवं जातीयता बोध उठ खड़ा होता है। कहानीकार ने यहाँ कलाकार की संवेदना को मुखरित किया है। व्यक्ति जिस बाहरी रूप सौंदर्य पर आकर्षित होता है वह तो क्षणिक और क्षणभंगुर है, शाश्वत सौंदर्य तो मन का, विचार का, व्यक्तित्व के विविध पहलुओं का और उत्कृष्ट कार्यों में निहित होता है।

'बापू का संकेत' कहानी में 'पाप को घृणा करों पापी से नहीं' का उदार अहिंसावादी सिद्धांत प्रस्तुत कहानी में है। प्रस्तुत कहानी में चोरी करनेवाले को माफी और दो रुपये देते हुए कथानायक ने गाँधीजी के महान आदर्श का पालन किया है। इससे उस आदमी में सुधार लाने में कथानायक सक्षम होता है। रामलाल नामक एक सुनार कथानायक के बरामदें में बैठा, उस की बेटी की टूटी माला को जोड़ रहा है परंतु बड़ी चतुराई से माला के तीन टुकडे करके एक को अपनी झोली में रख लेता है। कथानायक की दृष्टि में बापू के चित्र पर पड़ती है जिससे प्रेरित होकर वह सुनार को उनकी मेहनत के दो रुपये देकर विदा करता है। कथानायक का यह अहिंसात्मक आचरण स्वर्णकार को ग्लानि, प्रायश्चित और अपराध बोध की आग में पाँच साल तक जलाता है। दूसरे लोगों द्वारा सोनार चोर पुकारने से व्यथित होकर उसने अपने कुकृत्य की स्वीकृति द्वारा प्रायश्चित कर लिया। कथानायक के अहिंसक विचार से उसकी पापवृत्ति समाप्त हो गयी। उसके कथन है - "मैं आज झूठ नहीं बोलता, अन्याय नहीं सोचता, नहीं करता, स्वार्थ बिलकुल छूट गया है मगर लोग अब भी मुझे सुनार चोर ही छिपे-छिपे पुकारते हैं। सबसे अधिकार चोर हूँ उनकी दृष्टि में जो मेरे जैसे सुनार का काम करते हैं। इस दुःख से बाबूजी! मैं हरदम जला जा रहा हूँ।"

'अब कलयुग है' कहानी में मनुष्य के करतूतों से भगवान भी व्याकुल है। चिंताधीन है। भगवान की निंदा करनेवाले को राष्ट्रपति द्वारा पुरस्कार प्राप्त हो जाता है। तभी भगवान पहचान लेता है कि यह कलयुग है। 'अब आप मकान बदलिए' कहानी में कहानीकार भूत-प्रेतों पर अटूट विश्वास है। जबकि आज के भौतिकवादी युग में ये समस्त बाते सारहीन ही प्रतीत होती है। लेखक ने एक प्रेतात्मा को पात्र के रुप में व्यक्त करके मकान के किरायेदार प्रबोध को आकर्षित होने के वृतांत को मनोरम रुप में व्यक्त किया है। दूकानदार द्वारा इस रहस्य का उद्घाटन भी करवा दिया है कि वह रमिणी नारी रुप नहीं अपितु कुछ वर्ष पूर्व मृत लडकी है। मकान इसलिए कोई किराये पर नहीं लेता क्योंकि इसमें प्रेतात्मा का निवास है। इससे स्पष्ट होता है कि कहानीकार का भूत-प्रेत पर विश्वास है।

'बेचारा नक्सल' कहानी में जीवन की विषमता का चित्रण है। जिस आदमी को कथानायक नक्सलवादी मानकर अपने परिवार से दूर रखता है। वह अंत में उसके बच्चे का रक्षक बनता है। तभी यह भी पता चलता है कि असल में नक्सलवादी वह आदमी नहीं, जो स्वयं कथानायक का बेटा है।

निष्कर्ष के रुप में हम कह सकते हैं कि डॉ.नायर जी कहानियों की विशेषता यह है कि कहीं भी भारतीयता ह्वास नहीं हुआ है। उनकी दृष्टि सामाजिक और सांस्कृतिक आदर्शों पर केंद्रित रहती है। डॉ.नायर जी का समस्त जीवन मूल्यों की रक्षा के लिए समर्पित है। कहानीकार एक ओर अपने चारों ओर व्याप्त कुंठा, भ्रष्टाचार एवं मूल्य-विघटन को अपने व्यंग्य का लक्ष्य बनाने हैं तो दूसरी ओर सांस्कृतिक एवं सामाजिक मूल्यों पर आस्था व्यक्त करते हुए आज के मनुष्य के विघटित व्यक्तित्व को ऐतिहासिक चेतना की अखंडता से समन्वित भी करते हैं।

अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, भारत महाविद्यालय, जेऊर (म.रेल), तह-करमाला, जि-सोलापुर, महाराष्ट्रा

अस्योत्तर हिन्दी लेखिका चंद्रकांता के उपन्यासों का एक परिचय

सिंधू बी.ऐ

चंद्रकांता जी ने अपने उपन्यासों में आधुनिक मध्यम वर्गीय परिवारों के विखंडन एवं पारिवारिक पारम्परिक मूल्यों को नवीन मानसिकता के बीच उभरने वाले अंतर्विरोधों का बडा ही सहज सजीव वर्णन किया है।

'बाकी सब खैशियत है' में लेखिका ने यह दिखाने का प्रयास किया है कि किस प्रकार एक संयुक्त परिवार में छोटा भाई परवेश जाकर आज की उपभोगवादी संस्कृति के रंग में रंग जाता है। अपने सारे मूल्यों को ताक पर रखकर माँ-बाप, भाई, भाभी सभी से भावात्मक स्तर पर खूद को अलग कर लेता है।

'ऐलान गली ज़िंदा है', में उपन्यासकार ने कश्मीर की एक गली को चित्रित किया है। इस गली के जीवन में आज भी एक रोशनी की लकीर दिखाई नहीं देती है। पीढ़ियों पुरानी मान्यताएँ, सडे विश्वास कचरा दुःख-दर्द, सड़न और कीचड़ मौजूद है। नई पीढ़ी के लड़के बदलाव लाना चाहते हैं। अंधेरे से बाहर आना चाहते है और इसकेलिए प्रयासरत हैं। किंतू अधिक कुछ कर नहीं पाते। संपूर्ण उपन्यास में पीढ़ियों का अंतर्विरोध और द्वन्द्व स्पष्ट देखा जा सकता है। इसमें प्रसंगवश स्वातंत्र्योत्तर कश्मीर के कुछ मुद्दे भी उठाए गए हैं। किंतु वे उभर कर सामने नहीं आ सके हैं।

'यहाँ वितस्ता बहती है' और 'कथा-सतीसर' उपन्यासों में भी लेखिका ने कश्मीर को केंन्द्र में रखा है। 'यहाँ वितस्ता बहती है' राजनाथ कौल को केंन्द्र में रख कर कश्मीर के उस गरिमामय जीवन प्रवाह को चित्रित किया गया है, जो परिवर्तन के क्रम में क्रमशः उन पारम्परिक जीवन मूल्यों से दूर हटता चला गया है जिसके प्रकाश से प्रेरणा पाकर व्यक्ति भविष्य को भी महान बन सकता है। इसपर लेखिका कहती है "पुरातन को एक बीमारी की तरह छोडने की पक्षधर और आस्था शब्द से बिदकनेवाली पीढ़ी क्या पल भर रुक कर सोचेगी कि कुछ चीज़ें रोशनियों से छनकर आती हैं और काल का अतिक्रमण करती हैं," यह टिप्पनी स्पष्ट करती है कि लेखिका का अद्वितीय प्राकृतिक वैभव छाया में वितस्ता की तरह प्रवाहमान कश्मीर के सुख-दुःखमय लोकजीवन के अनेक रंगों के सघन चित्रण उपन्यास को काव्यात्मक गरिमा से युक्त करते हैं।

'कथा सतीकर' की मूलकथा १९३४ मई से २००० ई. तक की काल सीमा की कथा है। उपन्यास अपने संपूर्ण विस्तार में कश्मीर को उसके समस्त पौराणिक, ऐतिहासिक संदर्भ में प्रदर्शित करता है। लेखिका के अनुसार हर दौर में प्रदेश राक्षसी उत्पीड़न का शिकार बना है। किंतु यहां की अवाभ मिलजुल कर रहना जानती है। ईसा की पंद्रहवीं शताब्दी में सुल्तान जैलुल अब्दीन, जिसे प्यार से बड़शाह कहा जाता था, तो विस्थापित कश्मीरी पंडितों को सादर बुलवाकर फिर से आबाद किया था। कश्मीर की जनता को आज ऐसे ही बड़शाह की ज़रूरत है और प्रतीक्षा है। उपन्यास में पिछले दस सालों में आतंक के साये में घुटने हुए कश्मीर का बडा ही प्रामाणिक और सजीव वर्णन इसमें किया गया है। आतंक के दस दौर में भी डॉ. कार्तिकेय और उनकी पत्नी डॉ.काव्या दोनों काश्मीर में रहकर एक चेरिटेबल हॉस्पिटल चलाते हैं। आतंकियों के बलात्कार की शिकार युसफ़ का लड़की विक्षिप्त हो चुकी है। वह गर्भवती है. डॉ. काव्या मेजर आपरेशन करके लड़की और बच्ची दोनों को बचा लेती हैं। बच्ची की तेज़आवाज़ अस्पताल में गूँजती है। अपमान और अजाव की खोज से आतंकवाद के विरुद्ध उठी यह तीव्र आवाज़ उम्मीदों सपनों को जीवित रखने वाली आवाज़ है। काश ऐसा हो सकता। कशमीर की जनता सुख-शांदी के वातावरण में चैन की सांस ले पातीं। अपने जीवन की सहज गति प्राप्त कर पाती।

'अपने अपने कोणार्क', उपन्यास में कुनी नाम की एक ऐसी लड़की की कहानी है जो एक शिक्षिका है। आधुनिक जीवन मूल्यों से परिचित है। किंतु परंपरागत लक्षणशील संस्कृति की मर्यादा का पालन करनेवाली है। पर पुरुष से प्रेम करना उसकी नज़र में पाप है। ढ़लती जवानी में वह अपने मन की चाहत को रोक नहीं पाती है और सिद्धार्थ नाम के एक डीज़ाइनर से प्रेम करने लगती है। सिद्धार्थ पढ़ाई के सिलसिले में

मुझे कौन पढ़ता है ?

रवीन्द्रनाथ, महात्मागाँधी
नेहरू और लोहिया
के पत्र सबने पढ़े
छापे भी गए
शोध भी हुआ
हम छोटे से भी छोटे
अति-क्षुद्र
हम डर-डरकर लिखते हैं
बंद लिफाफे में पत्र
जिसमें रहता है हमारे सीने की आग
देश को बचाने का जज़्बा
शांति कायम करने की प्रतिज्ञा
मेरा प्यार, सुख-दुःख
मेरा त्याग, तपस्या, संयम
मेरी चिंता, इच्छा-आकांक्षा
मेरी कचोटती आत्मा
की अधूरी दास्तान
सीमा पर तैनात हूँ
इसलिए मेरा पत्र कोई नहीं पढ़ता!●

राम प्रवेश रजक

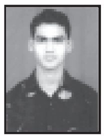

नेट, सेट, राजीव गाँधी फेलोशिप, रशियन, मराठी भाषा में सार्टिफिकेट कोर्स, बांग्ला, भोजपुरी भाषा की भी ज्ञान साक्षात्कार, लघुकथा, क्षणिका, अनुवाद, कविता लेखन में विशेष रुचि।

वीणा, लोकशिक्षक, अक्सर, खोज, मधुमती एवं अन्य दर्जनों पत्रिकाओं में कविता, क्षणिका लेख आदि प्रकाशित।

विश्वभारती, शांतिनिकेतन से प्रो. शकुंतला मिश्र के निर्देशन में शोधकार्य चल रहा है। शांतिनिकेतन में एक वर्ष अध्यापन कार्य भी किया।

पताः शकुंतला मिश्र, हिन्दी भवन, विश्वभारती
(शांतिनिकेतन) पश्चिम बंगाल ७३१२३. मोबाइलः ०९८००९३६१३९

ये भी शोध-पत्रिका के आजीवन सदस्य बने

नाम	: **प्रियारानी पी.एस.** (एम.ए.,एम.एड्,एम.फिल)
संपर्क	: टी.सी.२१/५१०, प्रीताभवन, पल्लितानम, करमना, त्रिवेन्द्रम - ६९५००२
फॉन	: ०४७१-२३४७९९९, ९४९७४७२०८८
विवाहित	: प्रदीप एस. की पत्नी
प्रकाशित लेख	: पेसबलिट्टी पेट्टन ओर ऐलिनेशन
शोधविषय	: अस्सियोत्तर महिला उपन्यासकारो की उपन्यासों में समाज शास्त्रीय अध्ययन
शोध केन्द्र	: एम.जी.कॉलेज, केशवदासपुरम
शोध शिक्षक	: डॉ.एस.आर.जयश्री

अस्योत्तर हिन्दी लेखिका चंद्रकांता की उपन्यासों का एक परिचय...

यू.एस.ए. जाता है। वहाँ से अपने एक मित्र के साथ ईशक चला जाता है। वहाँ के अस्पताल में सेवा करनेवाली एक नर्स से विवाह कर लेता है। यह समाचार पाकर कुनी भीतर से टूट जाती है और अन्ततः प्रभा भौसा का प्रस्ताव स्वीकार कर वह दो बच्चों के पिता विदुर डॉ. अनिरुद्ध से शादी कर लेती है। दोनों हनिमून केलिए पूरी और कोणार्क जाते हैं। सूनी की इस अंतरंग कथा के साथ लेखिका ने उड़ीसा की धर्म, संस्कृति, विश्वास, आदिवासियों की जीवन पद्धति ऐतिहासिक, भौगोलिक, परिदृश्य के चित्रण से उपन्यास को देश काल गत संपन्नता प्रदान की है। नारी जड़ मूल्यों का पाषाण खण्ड नहीं प्रेम की नदी है, रजनीगंदा के फूलों का सुरभि है और बाँसुरी की मधुर ध्वनि है।

चंद्रकांता-मृदुलागर्ग, राजीसेठ और मंजुल भगत की परंपरा वाली लेखिका हैं। किंतु वस्तुतः वह थोडी हट के हैं। चन्द्रकांता, जीने मध्यवर्गीय मानसिकता के विश्लेषण क्रम में आर्थिक सामाजिक कारणों को दशा कर अपनी रचना भूमि को विस्तृत करने का प्रयत्न किया है। परंपरागत मूल्यों के प्रति उनकी दृष्टि भी अन्यों से अलग हैं।

अभी हाल ही में चंद्रकांता जी को वर्ष २००५ केलिए 'व्यास सम्मान' मिली। यह 'व्यास सम्मान' आपको अपने उपन्यास कथा सतीसर केलिए प्रदान किया है।

सहायक ग्रंथ सूचीः

(१) हिन्दी साहित्य का आधुनिक काल; (२) कुछ नए साहित्यकारों की साहित्यिक कृतियों पर एक नज़र; (३) यहाँ वितस्ता बहती है। (१९९२) - चन्द्रकांता; (४) कथा सतीसर (२००१) - चन्द्रकांता; (५) अपने अपने कोणार्क (१९९५) - चन्द्रकांता।

हिन्दी विभाग, एम.जी.कॉलेज, त्रिवेन्द्रम

विशिष्ट भारतीय राष्ट्रवादः एक दृष्टिकोण

डॉ.रवीन्द्रकुमार *

राष्ट्रवाद के अभिप्राय और उद्देश्य के सम्बन्ध में अनेक बातें कही गई हैं, कई विचार प्रकट किए गए हैं। पश्चिम और पूरब, दोनों में, राष्ट्रवाद के बारे में, जो सामान्य बात प्रमुखता से उभरती है, उसके अनुसार कह सकते हैं कि राष्ट्रवाद एक विशेष राष्ट्र के प्रति एक समर्पण भावना है। यह एक विचारधारा है, आस्था के साथ राष्ट्र के प्रति समर्पण इससे प्रकट होता है। यह एक समाज का वह रूप भी है, जिसके अन्तर्गत सम्बन्धितजन साझे इतिहास, परम्पराओं, भाषा और संस्कृति के आधार पर अपने को एकजुट मानते हैं। राष्ट्रहित की सर्वोच्चता का विचार एवं राष्ट्र के लिए उसी विचार के अनुसार कार्य, राष्ट्रवाद का सार समझा जाता है। निस्संदेह, इस प्रकार, राष्ट्रवाद सामान्यतः एक राष्ट्र, एक देश अथवा समकालीन-आधुनिक विचार से उपजे शब्द, एक राज्य (राष्ट्र-राज्य)[1] की परिधि को समेटता है।

आम धारणा के अनुसार एक व्यक्ति, जो राष्ट्रहित को समर्पित हो, राष्ट्रोत्थान का विचार उसके कार्यों में प्रमुख हो, राष्ट्रवादी कहलाता है। दूसरे शब्दों में, राष्ट्रहित, राष्ट्रोत्थान विचार, उसी के अनुसार समर्पित भाव से कार्य, व्यक्ति के राष्ट्रवादी होने का आधार है। राष्ट्रहित और राष्ट्रोत्थान हेतु कार्य के समय राष्ट्रीय परिस्थितियों व उपलब्ध संसाधनों के साथ ही राष्ट्रीय मूल्य, संस्कृति, भाषा-शैली आदि आधारभूत रहते हैं, जिनके बल पर सम्बन्धित राष्ट्र में उन्नति की प्रबल सम्भावनाएँ मौजूर होती हैं। राष्ट्रीय परिस्थितियों के अनुरूप, समय की माँग को केन्द्र में रखते हुए, बृहद् राष्ट्रीय उन्नति सर्वोपरि रहती है। इससे निस्सन्देह, सम्बन्धित देश की उन्नति का मार्ग प्रशस्त होता है।

राष्ट्रोत्थान में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन करने वाले राष्ट्रीय मूल्यों, संस्कृति, भाषा-शैली एवं जीवन-मार्ग जैसे मूलतत्वों की स्थापना एक लम्बी समयावधि में विकसित प्रक्रिया द्वारा होती है। व्यापक सहमति द्वारा बृहद् कल्याण के उद्देश्य से निर्धारित राष्ट्रीय मानक उस प्रक्रिया को गति देते हैं और उस सहमति और गति की सुनिश्चितता में बृहद् जनसहयोग की निर्णयक भूमिका रहती है। वे निर्धारित मानक राष्ट्र और राष्ट्रजन के पहचान-चिह्न भी होते हैं।

जीवन-मूल्य, मार्ग और संस्कृति, साथ ही जीवन-दृष्टि के निर्धारण-निर्देशन और उन्हें गति प्रदान करने में धर्म-व्यवस्था की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। राष्ट्रीय मानकों और राष्ट्रजन को पहचान देने में वे अहम भूमिका निभाते हैं। आजतक भी इस सन्दर्भ में ये महत्वपूर्ण हैं। भारत के परिप्रेक्ष्य में इसे निश्चित रूप से कहा जा सकता है, क्योंकि भारत की राष्ट्रीय संस्कृति, पहचान और मानक-निर्धारण अथवा निर्माण में धार्मिक मूल्यों ने अतिमहत्वपूर्ण योगदान दिया है। इन्हीं मूल्यों ने सोच को बृहद् बनाने तथा व्यापक जनेकता हेतु कार्य करने हेतु एक समर्पण भाव का आह्वान किया है। इसीलिए, भारतीय परिप्रेक्ष्य को केन्द्र में रखकर, मैंने भारतीय मार्ग नामक अपने ग्रन्थ में कहा भी है: "यदि भारतीय मार्ग और बैदिक-हिन्दू जीवन-दृष्टि को एक-दूसरे का पूरक कहा जाए, तो इसमें कुछ भी अनुचित नहीं होगा।" यही वास्तविकता भी है।

भारतीय राष्ट्रवाद का प्रथम पक्ष राष्ट्रवाद की सामान्य अवधारणा के अनुरूप ही अखण्ड और सुदृढ़ भारत को समर्पित है। भारत का चहुँमुखी विकास इसकी प्रमुख मान्यता है। भारतीय राष्ट्रवाद का इतिहास अतिप्राचीन है; कदाचिंत् विश्वभर में सबसे प्राचीन। वैदिक-हिन्दू जीवन-दृष्टि से विकसित सर्वोच्च मानवीय मूल्य[2] विशेषत; जबकि जैन, बौद्ध, सिक्ख आदि दर्शनों द्वारा विकसित मूल्य सामान्यतः भारतीय राष्ट्रवाद के निर्माण में योगदानकर्ता रहे हैं। सर्वकल्याण और बृहद् व परिपक्व राष्ट्रीय सोच भारतीय राष्ट्रवाद की मूल भावना है।

चूँकि सर्वकल्याण और व्यापक दृष्टिकोण भारतीय राष्ट्रवाद से अभिन्नतः जुडे हुए सिद्धान्त हैं; भारत की सुदृढ़ता अपने वास्तविक रूप में सम्पूर्ण मानवता के उत्थान को समर्पित है, इसीलिए यह राष्ट्रवाद-सम्बन्धी सामान्य अवधारणाओं से, विशेषकर जो उत्तर-मध्यकाल

या आधुनिककाल में पश्चिम में उपजी व विकसित हुई, पूर्णतः भिन्न है। यही भिन्नता भारतीय राष्ट्रवाद का दूसरा, लेकिन वास्तविक पक्ष है। यह पक्ष भारत के राष्ट्रवाद को विशिष्ट बनाता है।

सर्वकल्याण और सर्वहित के प्रति दृढ़ संकल्पी विशिष्ट भारतीय राष्ट्रवाद को इसके "वसुधैव कुटुम्बकम्"[३] एवं "सर्वे भवन्तु सुखिन."[४] जैसे वैदिक-हिन्दू उल्लेखों से स्पष्टतः समझा जा सकता है। अति प्राचीनकाल से ही महान भारतीयों द्वारा सम्पूर्ण मानवता के लिए किए गए कार्यों से इसे जाना जा सकता है। विशिष्ट भारतीय राष्ट्रवाद को अपनी मूल अवधारणा में स्वयं की सुदृढ़ता और चहुँमुखी विकास को दूसरों की कीमत पर नहीं; दूसरों से छीनकर या अन्यों का शोषण कर अपनी सम्पन्नता के लिए नहीं, अपितु अपनी सुदृढ़ता से दूसरों की रक्षा और अपनी उन्नति से अन्यों की भी सुशहाली-सम्पन्नता की कामना में देखा जा सकता है। इसीलिए, निश्चित रूप से विशिष्ट भारतीय राष्ट्रवाद की परिधि अतिविशाल है। भारत के राष्ट्रवाद का सिद्धान्त बहुत विस्तृत है। यह अपने वास्तविक रूप में अन्तर्राष्ट्रीयतावाद को समर्पित है। इससे भी आगे भारतीय राष्ट्रवाद सार्वभौमिकता को समर्पित है।

राष्ट्रवाद की सामान्य विचारधारा को अधिकतर संकीर्ण दृष्टिकोण से आंका जाता है, परन्तु आज बढ़ते वैश्वीकरण के दिनों में जब राष्ट्रवाद की महत्ता-प्रासंगिकता निरंतर कम होती प्रतीत हो रही है, भारत की विशिष्ट राष्ट्रवाद की अवधारणा वैश्विक-सार्वभौमिक एकता और उन्नति के अपने आह्वान के चलते अभी भी पूर्णतः महत्वपूर्ण है। यह प्रासंगिक और अनुकरणीय है। यह समकालीन वैज्ञानिक अल्बर्ट आईसटीन के राष्ट्रवाद-सम्बन्धी विचार कि 'यह एक बालरोग है', के विपरीत की स्थिति है। यह अल्बर्ट गुरार्ड के विश्वास कि 'राष्ट्राद में घृणा है', के भी विपरीत है। उसी प्रकार, जार्ज ओरवेल जैसे व्यक्ति की मान्यता कि 'राष्ट्रवाद में सत्ता की भूख की भावना प्रकट होती है', से भी विशिष्ट भारतीय राष्ट्रवाद की वास्तविक अवधारणा कहीं तक मेल नहीं खाती। विपरीत इसके, इन्हीं पाश्चात्य विचारों के समकालीन महान भारतीयों, गुरू गोविन्द सिंह के उद्घोष 'मनुष्य जाति एक है', महर्षि दयानन्द सरस्वती की घोषणा कि 'सत्यमंच द्वारा ही मानव-एकता निर्माण सम्भव है' स्वामी विवेकानन्द के विश्वास कि 'शुद्धहृदयता धर्म है', मदन मोहन मालवीय के कथन, 'सत्यमेव जयते' एवं बाल गंगाधर तिलक के नारे, 'स्वराज्य मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है' के मूल में रहने वाली बृहद मानव कल्याण-भावना में विशिष्ट भारतीय राष्ट्रवाद की सत्यता को देखा और विश्लेषित किया जा सकता है। इसे महात्मा गाँधी के वक्तव्य से कि 'मेरा राष्ट्रधर्म मानवता के लिए है', तथा दीन दयाल उपाध्याय के स्वदेशी एवं विकेन्द्रीयकरण आधारित सम्पूर्ण मानवतावाद सम्बन्धी विचारों से समझा जा सकता है। ये सभी महान भारतीय थे। हिन्दुस्थानी थे और श्रेष्ठ राष्ट्रवादी भी थे।

**** सुप्रसिद्ध भारतीय शिक्षाशास्त्री एवं मेरठ विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति***

(१) क्षेत्र विशेष को स्वतंत्र-प्रभुसत्तात्मक इकाई के रूप में प्रकटकर्ता सिद्धान्त, अथवा भौगोलिक व राजनीतिक सत्ता के आधार पर एक क्षेत्र को पृथक इकाई के रूप में स्वीकारकर्ता पश्चिम से उभरा विचार। (२) जिनमें ईश्वर की सर्वोच्चता, मानव-एकता, अहिंसा और परिवर्तन-नियम की शाश्वतता की स्वीकार्यता का प्रमुखतः उल्लेख कर सकते हैं। ये स्वयं ऋग्वेद के प्रथम नौ मंत्रों में ही प्रकट हैं। इसी के साथ, अन्य वैदिक ग्रन्थों, विशेषकर उपनिषदों में ये स्पष्टतः विद्यमान है। (३) 'अयं निजः परोवेति गणना लघुचैतसाम उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम्।' (४) 'सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया। सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चित दुःखभाग्भवेतु।।'

२३-बी, लेइन २, मानसरोवर, सिविल लैइन्स, मीरेट-२५०००१

सिंगापुर में सम्मानित हुए डॉ.यायावर

अंतर्राष्ट्रीय साहित्य कला मंच मुरादाबाद (भारत) का २८ वाँ वार्षिक समारोह, अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी तथा सम्मान कार्यक्रम ३ फरवरी से ६ फरवरी २०१४ तक सिंगापुर में आयोजित हुआ। इस भव्य कार्यक्रम में कनाडा, अमेरिका, भारत के ९ प्रदेशों तथा सिंगापुर आदि देशों के हिन्दी-साहित्य सेवियों तथा प्रतिभागियों के सम्मुख डा.रामसनेही लाल शर्मा 'यायावर' को 'डा.बद्रीप्रसाद कपूर स्मृति साहित्य भूषण सम्मान' से सम्मानित किया गया।

डॉ.रामसनेहीलाल शर्मा, यायावर डी.लिट, ८६, तिलकनगर, बाईपास रोड, फीरोजाबाद

डॉ.विवेकी राय के उपन्यासों में शिक्षित युवा और राजनीति

पार्वती आर.

देश, समाज, युवा वर्ग को आधुनिकता का नशा चढ़ाने में पाश्चात्य संस्कृति, शिक्षा, संगीत, साहित्य की जितनी देन है अप्रत्यक्ष रूप से उतना ही योगदान राजनीति का है। राजनीति जो स्वस्थ न होकर अपने विकृत रूप में व्याप्त है, युवा वर्ग को गलत राह पर ले जा रही है। वर्तमान में राजनीति को समाज से और समाज को राजनीति से अलग नहीं किया जा सकता। यही कारण है कि राजनीति सहज ही साहित्य में भी आ गई है। विवेकी राय के उपन्यास भी राजनीतिक चित्रण से मुक्त नहीं हो पाए है। राजनीति के हर पहलू पर उनका चिन्तन दृष्टव्य है।

शिक्षित युवक राजनीति का सबसे बड़ा मोहरा बन चुका है। नौकरी या आर्थिक लाभ का लालच दिखाकर अपनी राजनीतिक शक्ति और कुर्सी को मजबूत करने में युवकों का उपयोग किया जाता है। नागरों की अपेक्षा ग्रामीण क्षेत्र की राजनीति अधिक रंग लेती नज़र आती है। युवक इस राजनीति में सक्रिय योगदान देकर निजी कार्यों से पलायन कर रहे हैं। आजकल ग्रामीण क्षेत्र शहरों महानगरों की अपेक्षा राजनीति के प्रमुख केन्द्र बनते जा रहे हैं। भारत की अधिकांश जनता गाँवों में चाहे-अनचाहे निवास करती है। अतः भारतीय गाँव राजनीतिक दलों के आकर्षण के केन्द्र हैं। ग्रामीण क्षेत्र राजनीतिक दलों के संघर्ष-क्षेत्र बन गये हैं। इन्हीं दलों के कारण आज गाँवों की राजनीति अधिक विषाक्त हो चुकी है। इस राजनीति का प्रमुख आधार-स्थल शिक्षित, बेकार और दिशाहीन युवक बने हैं। इनके पास कोई काम नहीं है अतः बैठे-बैठे राजनीति करते हैं। विवेकी राय ने युवक और राजनीति के इन्हीं सम्बन्धों पर प्रकाश डाला है। बेकार युवक खाली वक्त में राजनीति करना चाहते हैं और राजनीति की महान हस्तियाँ बेकारों को शस्त्र बना रही हैं।

'लोकऋण' में मास्टर गिरीश का भाई त्रिभुवन पढ़ाई के बाद राजनीति से जुड़ जाता है। आर्थिक लाभ के लिए अनेक गोटियाँ बिठाकर सभापति बनता है। उसके पिता की आकांक्षा थी कि हम लोग ज़मींदार है, अतः बेटों को चाहिये कि वे बड़े होकर ज़मीन बढ़ाएँ तथा खूब पढ़-लिखकर नाम करें। "त्रिभुवन पढ़ा-लिखा तो नहीं, हाईस्कूल में फेल होकर गृहस्थी में भर्ती हो गया परन्तु पिता की बाकी दो आकांक्षाएँ वह ज़रूर पूर्ण कर रहा है। शभापति बनकर उसने कितना नाम-यश कमाया?.... पोखरे का दस बीघा रकबा कितनी आसानी से उसका हो गया? उसके लिए नीचे से ऊपर तक चकबन्दीवालों की क्या नहीं खतिरदारी करनी पड़ी?"[1] त्रिभुवन जैसे अर्द्धशिक्षित कई युवक राजनीति में सहयोग देकर आर्थिक लाभ उठा रहे हैं। उनके पास जीविका का कोई साधन नहीं है, अतः जैसे भी हो, राजनीति से रुपये कमाकर अपनी जीविका का जुगाड़ बिठाने में लगे हैं।

'सोनामाटी' में भुवनेश्वर और उसकी दोस्त-मण्डली राजनीति से जुड़ी है। विधानसभा के चुनाव को लक्ष्य बनाकर भुवनेश्वर जनसम्पर्क के कार्यक्रम बनाना चाहता है। वह सोचता है, "जनसम्पर्क के तूफानी कार्यक्रमों को कल से ही चालू कर देना है। संजयनी के कार्यक्रमों को जन-जन तक पहुँचा देना है। पूरे क्षेत्र का युवा वर्ग उसके साथ है।"[2] संजय गाँधी के नाम को लेकर पूरी भारतीय राजनीति में शोर-सा मचा था। इसी का नतीजा है कि उनके नारों को लेकर साहित्य भी प्रभावित हो गया था। भुवनेश्वर संजय और कांग्रेसियों का प्रचारक बनकर विधानसभा के चुनावों में उतरने की इच्छी रखता है।

'समर शेष है' में प्रभुनाथ स्कूल में अध्यापकों को डरा-धमकाकर नेता बनना चाहता है। सन्तोषकुमार नकलबाजी का विरोध करते हैं, तब प्रभुनाथ नेता बनकर दोस्त-मण्डली के साथ उनकी पिटायी करती है। वह गुरुजी से कहता है, "गुरुजी, हमारा तो पेपर खराब हो ही गया मगर नामजद रिपोर्ट कर मुकदमा चलाये होते तो आपकी भी ज़िन्दगी मैं खराब कर देता। यह तो बढ़िया सुबुद्धि जगी कि आपने किसी का नाम नहीं लिया।"[3] प्रभुनाथ द्वारा इस प्रकार नेता बनकर अध्यापकों को डराना-धमकाना उसका राजनीति में प्रवेश दिखाता है।

'मंगलभवन' में नेता लोग बेकार युवकों का लाभ उठा रहे हैं। वे बेकारों को दिशाहीन बनाकर साम्प्रदायिक हिंसा फैलाकर अपनी कुर्सियाँ मजबूत करते हैं। आज

दोपहर

मलयालम कहानी

सेतु

अनुवादकः डॉ.षण्मुखन

दोपहर ही झपकी से उठकर चारों तरफ देखा तो माँ को खिड़की के पास एक मैले कागज़ का टुकड़ा नज़र आया। धूल और हवा के साथ सलाखों से आया एक पत्र-हरिदास आ रहा है।

उसे बार बार पढ़ते, कुछ देर पहले झपकी के दौरान नज़र आए दृश्य माँ याद कर रही थी।

दो पहरेदार उसे खदान की तरफ पैदल ले जा रहे थे। उसके हाथ पैर लंवे ज़जीरों से जकडे थे। कोई अंक अंकित कमीज़ और पतलून उसने पहने थे। धूप से झुलस गए चेहरे से पसीने की लकीर निकल रही थी। धूसर हवा में उनके रूप नज़र आ रहे थे और ओझल भी हो रहे थे। आस्मान को छूते चट्टानों के तले वे खडे हो गए। पहरेदार उसके जंजीर खोलकर कुछ दूर पर शिला पर बैठ गए। पत्थर के टुकड़ों पर आलस बैठे हुए वह थोडी देर चारों तरफ देखता रहा। जब पहरेदार कुछ चिल्लाकर बोलने लगे तो वह ज़रा हिल गया। एक भारी पत्थर अपनी तरफ सटाकर हथौडे से धीरे धीरे प्रहार करने लगा। ऊपर सूरज झूलस रहा था। जब धूप और गर्मी उसके माथे के ओर घुलकर रिसने लगी तो उसके हाथ हुँकार के साथ ऊपर उठ गए। दुगने बेग से पत्थर पर हथौडे की मार पड़ी तो चिनगारियाँ बिखरने लगीं। तराई से बही धूसर हवा में चिनगारियां और पसीने की बूंदें तितर बितर हो गईं। जब उसने मुँह झटका तो माँ ने देखा-वो मेरा हरिदास है न?

झपकी से उबरने के बाद भी माँ यही बोलती रही-वह मेरा हरिदास है। उसकी आवाज़ में गम व आकांक्षा नहीं थीं। वह सिर्फ यही रटती रही। वह मेरा हरिदास है। हवा और धूप के हाथों ने जिस पत्र को फेंका था, उसके अक्षरों को बीनते वक्त भी वह नासमझ बच्चे की तरह रट रही थी - हरिदास आ रहा है। मां को यह खयाल नहीं आया कि क्यों ये अक्षर फूलकर रहम में तब्दील हो मेरे दिल नहीं भर रहे हैं। वे सोच रही थीं कि हरिदास के पैर के जंजीर अब घुल गए होंगे। हवा, बारिश और धूप से जंग खाए उसके अंकुडे अपने आप खुल गए होंगे। उँघते पहरेदारों की ओंखें चुराकर, चट्टानों और पत्थरों के अंबारों के बीच से, जलते रेत की राह पर, बिवाई से ज़ख्म हो,

---

डॉ.विवेकी राय के उपन्यासों में शिक्षित युवा और राजनीति...

तो राजनीति की यह स्थिति भयावह रूप धारण कर चुकी हैं। सभी पार्टियों में साम्प्रदायिकता का जहर फैला है। एक पार्टी साम्प्रदायिक है तो दूसरी उसका विरोध प्रकट कर राजनीतिक गोटी बिठाने में प्रयासरत है। अर्थात सभी पार्टियाँ मूलतः धर्म और साम्प्रदायवादी हैं। लेकिन पवित्र होने का नाटक कर युवकों में जहर घोल रही हैं। 'मंगलभवन' में ही जगदीश विक्रम मास्टर से कहता है, "बेकारी कैसर की तरह फैली है। बेकार युवा पीढ़ी आत्महत्या के विकल्प का चुनाव कर रही है, अपराध की ओर बढ़ रही है, नशे पर टूट रही है, अराजक तोड़-फोड़ में संलग्न हो रही है और कुटिल राजनीतिज्ञों की कुर्सी की लडाइय़ों में हथियार के रूप में हस्तेमाल होकर नष्ट हो रही है।"[४] जागदीश की प्रस्तुत बात सम्पूर्ण युवा पीढ़ी की दिशाहीनता पर प्रकाश डालती है। जब तक शिक्षित युवक दिशाहीनता पर प्रकाश डालती है। जब तक शिक्षित युवक बेकार है तब तक गन्दी राजनीति का खेल-जारी रहने के संकेत मिलते हैं।

ग्रंथ सूचीः

(१) लोकऋण, डॉ.विवेकी राय, पृ.सं.१०१; (२) सोनामाटी, डॉ.विवेकी राय, पृ.सं.१०४; (३) समर शेष है, डॉ.विवेक राय, पृ.सं.१०५; (४) मंगलभवन, डॉ.विवेकी राय, पृ.सं.१५४

संदर्भ सूचीः

(१) लोकऋण, विवेकी राय, पृ.सं.१०१, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, १९८८ ई; (२) सोनामाटी, विवेकीराय, पृ.सं.२०१, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली, १९८३ ई; (३) समर शेष है, विवेकी राय, पृ.सं.१०५, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली, १९८८ ई; (४) मंगलभवन, विवेकी राय, पृ.सं.१०४, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली, १९४४ ई.

शोध छात्रा, एम.जी.कॉलेज, त्रिवेन्द्रम

वह पैदल आ रहा है। माँ ने सोचा, इतना समय बीत चुका है, लेकिन मेरे बेटे की ज़िद अनथकी हैं।

माँ याद करने लगी, ऐसे ही एक दिन दुपहरी में एक लड़की चार पांच साल के बेटे के साथ आई थी। आते ही उसने बेटे से कहा-

"नानी के पाँव लगा बेटे।"

चारों तरफ चकित होकर देखते हुए वह उसके पाँव पडा जैसे कोई अहित काम कर रहा हो। बासी खुरदरे पाँव पर अपनी छोटी उंगलियाँ दबाकर वह थोडी देर ऐसे ही लेटे रहा। तब माँ को ऐसा लगा किसी ने ठंडी हाथों से माथे पर छू लिया हो। तब भी माँ हिले बिना खड़ी है तो लड़की ने कहा - "काफी है बेटे, उठ जाओ।"

खडे होते वक्त भी उसके चेहरे की घबराहट ओझल नहीं हुई थी। लेकिन माँ कुछ भी देख नहीं रही थी।

फिर जब लड़की पाँव लगी तो भी माँ हिली नहीं।

माँ ने उससे पूछना चाहा कि किस ग्रीष्मकाल में पहाड़ी तल के चट्टानों के बीच, किस गुफा के अंधकार में तुम्हारी मुलाकात हरिदास से हुई थी? लेकिन जल्दी उसे निगल लिया।

लड़की आकांक्षा के साथ दिल की बढ़ती धड़कनों को संजोए इंतज़ार कर रही थी। माँ कुछ न कुछ पूछ लेगी। बच्चे के माथे पर हाथ रखकर आसीस देगी। लेकिन माँ ने उससे बैठने के लिए भी नहीं कहा। जब पाँव थक गए तो वह ज़मीन पर उकड़ूँ बैठ गई। धूप से कुम्हला बच्चा थके मांदे उसकी गोद में गिर पडा।

माँ ने देखा नहीं। उनकी नज़र दूर कहीं गडी हुई थी। माँ ने याद की। बेटे से जुडी मेरी जानकारी भी स्तब्ध रातों के अंतिम पहरों में नज़र आते वे अपूर्व नज़ारे ही थी। कहीं भी हो, कभी कभार ऐसे छोटे छोटे नज़ारों के ज़रिए वह मेरे भीतर घुस आता था। ऐसे कितने नज़ारे।

एक हाथ में ढाल और दूसरे में भाल थामें दक्षिणी हवा कों चीरते हुए किले की तरफ बढ़ता घुटसवार योद्धा। उसके हाथ की उभरी पेशियाँ। धूप और वेग में चमकता उसका लौह-कवच। भाल के भोंक से बनी प्रकाश और हवा की अनेक ओटें।

फिर एक दफा वह बीहड़ जंगल से सरक रहा था। वह बुरी तरह ज़ख्मी हो गया था। उसके सरकने की वजह से सूखे पत्तों में खून की बूंदें जम गई थीं। उसका गला सूख गया था। उसे ज़ोरों पर भूख लग रही थी।

उस रात को मां जागकर, अनजाने थोडी देर रोती रही। पर जल्दी बंद कर दिया। फिर अंधेरे में लड़खडाकर रसोई घर पहुंच गई। दीप जलाई। हाँडी में बचे भात, तीन बडे कौर बनाकर खिड़की से अंधेरे की तरफ फेंक दिया।

उस लड़की की आँखें तब भी माँ के चेहरे पर गड़ी हैं। बच्चा उसके गोद में सो गया है। वह मुझसे क्या चाहती है? मुझे उसे क्या देना है? प्रार्थना, दुआ और रोज़ा की बरकत है हरिदास। चट्टानों की दरार और गुफा के अंधेरे में इसे तो इनकी ज़रूरत नहीं पडी होंगी।

सिर्फ इनके लिए करने मेरे पास कुछ भी नहीं है। माँ सोच रही है। इनके नमस्कार का मतलब भी मुझे समझ में नहीं आ रहा है।

लड़की थोडी हिल गई। थके मांदे बच्चे का सिर सहलाते हुए वह यों बोली जैसे किसी से नहीं है - "सुबह निकली थी, बहुत दूर चली, कड़ी धूप में।" माँ ने बात सुनी।

तब हरिदास बीहड़ जंगल में खून से सने घुटनों के बल सरक रहा था। कतिपय पंछी आस्मान को ढकती डालियों पर पंख पसार कर आ बैठे। भीगी रात निशा-पंछियों व झींगुरों के क्रन्दन और जंगल की चीख के रूप में निकट आ रही थी। उसके गले की लार तक सूख रही थी। पास कहीं बहाव की आवाज़ सुनकर उसने कान लगाया। फिर जख्मी पैरों से सरककर उस ओर बढ़ गया।

एकाएक माँ उठ गई। हाँडी में बचे भात और मटके में पानी लिए वापस आई। अचानक लड़की की आँखें फूल गई। चेहरे में लालच उभर आया। बेटे को जगाने की कोशिश की। नींद में कुनमुनाया तो रोष से झटकाकर जगाया।

माँ देखती रही - वे लोग पानी पूरा पी रहे हैं और हाँडी में हाथ डालकर बारी बारी से भात हवस से खा रहे हैं।

तब हरिदास एक सोते के पास लेटे सो रहा था। उसके होठों और सीने में भात के दाने चिपक पडे थे।

तब भी माँ उनसे कुछ नहीं बोली। पेट भरने की खुशी में वे देर तक उनकी तरफ देखते रहे। माँ ने खुद से पूछा - ये मुझसे क्या चाहते हैं? ये किसके लिए फिर

लघुकथा

इंजीनीयर संपत

लेखक: बी.गोविन्द शेनाय

बिजली विभाग के इंजीनीयर संपतजी ने स्वेच्छा से अवकाश ग्रहण किया। विभाग के बाबुओं ने आराम की सांस ली और संपत की पत्नी मीनाक्षी प्रसन्न हो गई। संपत कानून और व्यवस्था के ज़ाता थे और थे नीतिनिष्ठ। उनका निर्णय हर मामले में बाबुओं के हितसाधन में अडंगा बन जाता था और उनको निदेशक की शरण लेनी पडती थी। बिदाई की सभा शानदार थी जिस में उनकी कार्यकुशलता की प्रशंसा की गई, साथ ही उनकी पेंशन का आदेशपत्र भी उन्हें भेंट किया गया। संपतजी घर आये तो पत्नी ने कहा - अब तुम्हें भाग-दौड, परेशानी और बकवास से मुक्ति मिल गई है; हम आराम से दिन गुजारेंगे। उनका पत्र मशीन टूल्स का मैनेजर था और पुत्री नामी वकील बम्बलू की पत्नी थी। दोनों कभी कभी आ माँ-बाप से मिल लिया करते थे। औपचारिक मिलन सा ही था। मीनाक्षी ने पति केलिए स्वादिष्ट भोजन, सुख सुविधा और आराम की सुष्ठ व्यवस्था की, शिकायत का कोई अवसर ही नहीं आने दिया। उधर संपत ने पत्नी को गृहस्थी में स्वेच्छा से सहयोग देना प्रारंभ किया जो तनातनी का कारण बना। संपत ने मौन साधना ही उचित समझा। परन्तु सहयोग देना जारी रखा। इस बीच दफ्दर का कोई आदमी उनसे मिलने नहीं आया, न कोई इष्ट मित्र ही उनसे आ मिला। बंधु बांधवों संरिश्ता घनिष्ठता का कभी रहा ही नहीं और परिचितों का रुख अनदेखा करने का ही रहा। एकांत की घुटन अनुभव हुई। अंतर छटापटा उठा। मुक्ति की राह खोजते हुए निकल पडे रात को जो अधी बीत चुकी थी। राजमार्ग पर आ दाई ओर सीधे चले घंटे भर, फिर वाई ओरवाली सडक पर सीधे और भटकते हुए नाशनल पार्क के एक ओर बिजली के खंभे से सटकर खडे हो गये, चिंतनरत ध्यानमग्न से। इतने में देखा, पुलिस जीप आ रही है आवारा शराबियों को लिये हुए। पुलिस ने संपत को भी समान धर्मा समझ जबर्दस्ती जीप में बिठाया और थाने ले गई। दूसरे दिन पुलिस ने शराबियों को उन के हाल पर छोडा दिया और संपत को उनके घर ला छोड दिया। तब तक हवालात में शराबियों के साथ बंद इंजीनीयर संपत की सचित्र वार्ता दैनिक क्रांति में प्रकाशित हो चुकी थी। पत्नी ने सिर पीट लिया।

दोपहर...

इंतज़ार कर रहे हैं?

माँ ने याद की थोडी देर बाद, चेहरा झुकाए, बेटे का हाथ थामे वह लड़की ढ़लती धूप की तरफ बढ़ गई थी। तब माँ को लगा था कि अचानक अपनी उम्र बढ़ गई है। पके बाल की लड़की के पतले हाथ थामे हरिदास मज़बूत कदमों से चल रहा है।

उनके फाटक पार कर ओझल होने के बाद भी मां को कुछ भी समझ में नहीं आया। दरवाज़े के सहारे खडे देर तक देखती रही। वह लड़की कौन है? किसके लिए इतनी दूर यहाँ तक चलकर आई? मेरे हाथ के दाने के लिए? उन्हें ही मुझे दाना देना है न?

धूप और हवा के फेंके गए उस पत्र लिए माँ खिड़की के पास खड़ी रही।

मुझे इस हवा और धूप पर बिलकुल भरोसा नहीं। कितने साल बीत गए हैं। ऐसे कितने पत्र पहले भी इस खिड़की से आ गिरे हैं।

उन्होंने फिर उन अक्षरों को घूरा। वे ज़रा भी हिलते नहीं। इतनी देर देख चुकी हूँ तो मेरे लिए उन्हें हिलना है न? उन्हें जानदार होना चाहिए। मुझसे बहुत कुछ बोलना चाहिए। लेकिन वे बेजान पडे हैं जैसे कि सफेद फैलाव में चिपकाए गए हों।

ये बेजान अक्षर माँ से क्या कह सकते हैं?

माँ ने उस कागज़ के टुकडे कों सिकोड़कर खिड़की से बाहर फेंक दिया।

तब भी हरिदास पहाडी तराई में, झुलसती धूप में पत्थर तोड़ रहा था।

लीला निलयम,
कोच्चिन विश्वविद्यालय पोस्ट, कोच्ची ६८२०२२

जय जय प्यारा भारत देश

गणेश प्रसाद महतो
अध्यक्ष, ज्ञानोदय पुस्तकालय कुशवाहा नगर, अम्मापाली ८१३२०९, भागलपुर, बिहार

तीन तरफ सागर लहराये,
उत्तर हिमगिरि शीश उठाये,
शस्य-श्यामला उर्वरा धरती
जनमें जहाँ भरत नरेश।
जय-जय प्यारा भारत देश।।

ऋषि-मुनियों का तपस्थली यह,
ईश्वर लीला का शुचि स्थल यह,
वसुधा पर साक्षात् स्वर्ग-सा-
गंगा-यमुना हरेक्लेश।
जय-जय प्यारा भारत देश।।

अनुसुश्या सीता सावित्री बिहुला,
अहिल्या द्रौपदी और उर्मिला,
जिनके सतीत्व पर टिका हुआ है
भू का यह रमणीक प्रेदेश।
जय-जय प्यारा भारत देश।।

राणा नानक बुद्ध महात्मा
भगत सुभाष से भारतीय आत्मा,
सत्य अहिंसा देश सुरक्षा
जिनके हैं पावन संदेश।
जय-जय प्यारा भारत देश।।

सेवा प्यारा दान उपकार,
सदाचार न्याय ना कभी अपकार
भक्ति-कर्म हैं रामायण व
पावनगीता के संदेश।
जय-जय प्यारा भारत देश।।

धरा का पहला ज्ञान केन्द्र यह,
संस्कृति-कला का जन्म स्थल,
स्वर्णज-रत्नों के भंडार यहाँ
ललचाये-जले विदेश।
जय-जय प्यारा भारत देश।।

हिन्दी है उसकी राष्ट्रभाषा
अहिंदी नेता भी कहे खुलासा
एकता अखंडता का पोषक है पढ़िये
कर जीरि कहे गणेश।
जय-जय प्यारा भारत देश।।

हाइकु

डॉ.सुरेश उजाला
१०८, तकरोही, पं.दीन दयालपुरम्, इन्दिरा नगर, लखनऊ, उ.प्र.२२६०१६

नहीं है श्रम
सफलता का रास्ता
केवल श्रम

राचा मैं हार
समझा फूल जिन्हें
निकले रवार

आज की शाम
जीवन सफर में
आप के नाम

स्वर्ग उतारो
श्रम से धरती का
रूप सँवारो

रही है नोच
व्यक्ति का नाग-मन
विबैली सोच

क्या-क्या पटाये
पीढ़ियों के कर्ज को
कैसे चुकाये

सच का जोर
मज के जंगल में
मचाता शोर

मन से हिला
कॉटो से नहीं रह
फूलों से छिला

करा-कराया
जीवन में अपने
नहीं लजाया

जंगलीपन
देख कर के रोया
मानव-मन

निर्दयी आग
मचाकर तबाही
गई है भाग

नेक इंसान
नेकी के कारण ही
बने महान •

हाइकु काव्य

नलिनी कान्त
अंडाल, पं.बंगाल ७१३३२१

स्वर्ण कलश
प्रातः प्राची मस्तक रहा झलक।

हो गया भोर पंछी का
मचा शोर उषा विभोर।

प्रति प्रभात नव युग
पावन मन भावन।

चूड़ाकरण वासन्ती पर्व पर
तरु शिख्रा का।

नहीं धरती कभी होती
परती यह पल्लवी।

ज्वलन्त धूनी रमाए बैठा रवि
उज्ज्वल छवि।

जगरनाथ सुभद्रा बलराम
पुरी दिक्षाम।

पावन नाम गौतम कृष्ण राम
पूर्ण विराम।

प्रत्येक पर्व संस्कृति का सन्दर्भ
रख्रता अर्थ।

आंधी तूफान बवंडर का
धाम है आस्मान। •

ये भी शोध-पत्रिका के आजीवन सदस्य बने

नाम	:	**सजिता एस.आर.** (एम.ए. बी.एड्)
संपर्क	:	आर.एस. भवन, पोड्डुम्मूड, कूवलशेरी पी.ओ.-६९५५१२
फॉन	:	९७४४५५८८३३
विवाहित	:	सुरेषकुमार सी.वी. की पत्नी
शोधविषय	:	सुधा अरोड़ा जी के कथा साहित्य में आधुनिकताबोध
शोधकेन्द्र	:	एम.जी.कॉलेज, केशवदासपुरम
शोधशिक्षक	:	डॉ.एस.आर.जयश्री

रामेश्वर दुबे की दो कविताएं

रामेश्वर दुबे सम्प्रति दूबे जी श्रम उत्पादकता विभाग में उपनिदेशक के पद पर कार्यरत हैं। राष्ट्रीयता उत्पादकता परिषद् प्रबन्धन में भी दूबे जी स्नातकोत्तर होने के बावजूद कवि हैं; और उनका कवित्व न केवल जिन्दा है, बल्कि ताजा और सुर्ख़ है। वे उत्तर आधुनिकता को महसूस करते हैं। बाज़ारवाद की पीड़ा को समझ कते हैं। सबसे महत्वपूर्ण और ऩल्लेख़नीय केवल यह है कि विज्ञान ने दूबे जी की कविता को, उनके साहित्य को, उनके साहित्यिक तेज को, उनकी साधना को नहीं रोका। काव्य नाटक, काव्य-संग्रह, उपन्यास निबन्ध-संग्रह, कहानी-संग्रह, साहित्य के इन विविध रूपों में इन्होंने अपने को प्रकाशित किया है। **-सम्पादक**

आज का बाजार

वसुधैव कुटुम्बकम मत कहो, कहो विश्व व्यापार
यूएनओ को मारो लाल, करो वियतनाम अफगान इराक पर वार
श्वांस लो धुआँ, पियो पेप्सी, कोक, बियर बार
करो विचारों, इतिहासों का अन्त सभ्यताओं का निरन्तर वार
पढ़ो बाजार, पढ़ाओ बाजार, बढ़ो बाजार, बढ़ाओ बाजार
जय हो बाजार जय हो बाजार, जय हो बाजार।

पंजातन्त्र, मानवता, धर्म को बचाते अणुबम नारे तलवार
झूठ, फरेब, लोभ, भय, सेक्स, विज्ञापनों की भरमार
अपराधी, हत्यारे खुलेआम घूमें, संत सभी बन्द कारागार
हाथ में लैप टॉप कान में सेल फोन, चमचमाती मोटर कार
चमड़ा मोटा, दिमाग छोटा, हृदय हुआ छलनी और तार-तार
धन्य हो बाजार, धन्य हो बाजार, धन्य हो बाजार।

अब मंदिर न मस्जिद, न गिरजा, न गुरुद्वारा
न जैन, न पारसी, न यहूदी, न बौद्ध बिहार
न पण्डित, न मुल्ला, न पादरी, न जत्थेदार
न भाई बहन, न माई बाप, न दोस्त यार
सारे रिश्ते नातों में पसर गया अब बाजार
सिर्फ भाड़े के पति-पत्नी ही भरा पूरा परिवार
जुड़वां बेटियाँ कुवारी तड़पें, ले जाओ एक के साथ एक फ्री है यार
अब न रहा गाँव, न रहा पड़ोस, न रहा घर, न रहा द्वार
उदय हो बाजार, सुहृदय हो बाजार, अभ्युदय हो बाजार।

सड़क बनाते सतनु मर गया घड़ा बनाते घूरा कुम्हार
मॉल में दब गये दुधन ददु, जूता बनाते चतुरी चमार
मुसहर टोली मनाई होली, ख़ेत में पकड़े जब बे आतंकवादी चूहे चार
प्लास्टिक ख़ाके गाय मर गई, कूड़ा बिनते कनुआ कहार
पेस्टीसाइड पीके रेडी, राणा मर गये मछली पकड़ते पुथन पेरियार
भारत-भवानी की भ्रूण में हत्या, पार्लियामेंट में जूतम पैजार
ग्रस्त हो बाजार ग्रस्त ही बाजार, भ्रष्ट ही बाजार।

पापा को मिला जबरन वी आर एस
चाचा की फैक्ट्री बन्द-आज का समाचार
दादी मेरी ख़ाट पड़ी बाबा बूढ़े बेहद बीमार
दीदी हो गई ख़ुद नीलाम जंवान बेटा बेरोजगार
मनुआ मरा दवा बिना मुनिया मरी बिन आहार
जय हो बाजार, क्षय हो बाजार, लय हो बाजार।

जंगल की आग की तरह पछेया हवा में बढ़ रहा बाजार
गाय, भेड़, बकरी ख़रगोश तीसरी दुनिया के जानवर लाचार
पूरे जंगल में बचा एक हिंसक शेर रहा दहाड़
पूरवइया बयार की है अब सबको इन्तजार
पस्त हो बाजार, घ्वस्त हो बाजार नष्ट हो बाजार। •

तेल और पानी

पढ़ा है विज्ञान में,
पानी का धनत्व तेल से ज्यादा होता है
गाढ़ा दिख़ता पर हल्का होता है
लगाता कुछ और पर कुछ और होता है
इसीलिए तेल पानी पर छा जाता है।
पानी के ऊपर और ऊपर ही बहता है।
तो क्या विज्ञान के इसी नियम के तहत
पुरानी पानीदार सभ्यता पर
छा गया तत्काली तैलीय सभ्यता
विज्ञान के अटल नियम हैं
तेल पानी मिलेगा
तो पानी पर तेल बहेगा।
वर्षों से मै चिल्लाता रहा,
जोर शोर से भनभनाता रहा
दिन रात बड़बड़ाता रहा
पानी तेल मत मिलाओ

(बाकी अगले पेज में)

स्वतंत्रता का गान

जगन्नाद विश्वा, मनोबल, २५, एम.ऐ.जी. हनुमान नगर, नागडा, म.प्र.४५६३३५

आओ गाएं आज हम स्वतंत्रता का गान
आज का दिन है नई ज्योति का अभियान

हमें रोकने बाधाएँ अपना जोर लगाए
बरसाये गोलियाँ चाहे बारुद बिछाए
युग-युग गूंजे स्वर आजादी का
भरेंगे हम प्राणों में नव प्राण
आज का दिन है नई ज्योति का अभियान

हमें दिशा-दिशा में अलख जगाना है
अब घर-घर नई किरण पहुँचाना है
हम सृजन वर्तिका के परवाने
हमारी आस्थाएँ अटल महान
आज का दिन है नई ज्योति का अभियान

हमें प्रहरी धवल हिमालय की सौगन्ध
स्वदेश हित हुए शहीदों की सौगन्ध
सदा ज्वालाओं को गले लगाकर
वारेंगे माँ पर हंस-हंस प्राण
आज का दिन है नई ज्योति का अभियान

आज का दिन यह उत्कर्ष का संकेत है
आज का दिन यह चेतनता समेवत है
गीत कर्मरत गा रही मशीनें
पाया वैभव का गौरवमय वरदान
आज का दिन है नई ज्योति का अभियान

कवि से

गाओ गीत कुटि के ओ मन खेत और
खलिहान के।
उठो कलम के धनी गीत अब लिखना
श्रमिक किसान के।
अब तुम ऐसा गीत सुनाओ जो इन्सान
नया जन्माए,
सूने सूने वन मरु स्थल में वैभव का
रास रचाए,
जिसकी सबल भुजाओं में हो ताकत का
अंगार।
जिसके दिल में हो असीम स्नेह चिरायु
पारावार।
अतुल देश प्रेम भंडार।
जो श्रम की सुर सरि बहाकर शुष्क
धरा को लहराए,
जो हल फणियाँ खींच खींच कर
राँगोली नव सजवाए,
उन मतवाले बैलो का पावन अर्चक
गीत रचो।
उठते गेती और कुदाल के वंदन गीत रचो।
चिर नूतन रीत रचो।
जो पर्वत से टकराये और सागर में पथ
गढ़ता हो,
जो विकास को लक्ष्य मानकर मुक्त
दीप सा चलता हो,
बुनदा ऐसा गीत कि जिससे नूतन
भोर जगे।
संगीतों की लहरों में नव कलपुर्जो
का शोर जगे।
हर्ष का चंचल मोर जगे।
जिसके हंसते जीवन में चमका
संस्कृति का दर्पण हो,
जिसके साहस हृदयाँचल में पावन
धर्म और दर्शन हो,
जिसका हर गतिमान चरण छूता
मंजिल को बढे चले।
श्रम का कुंकुं म ले जीवन को सदा
पूजता बढे चले।
फौलाद ढालता बढे चले।

पीजरा रंगीन

पं. गिरिमोहन गुरु द्वारा
गिरिजा शंकरशाम,
होशंगाबाद (म.प्र.)

तिमिर किरनों से मिला कर हाथ
मंच पर आसीन दिखता है...

स्वयं के अस्तित्व की रक्षा
विना बैशाखी नहीं सम्भव
मूल्य बाजारू हुए सारे
मूल्यांकन कर रहा अनुभव

शक-शकुनि की फिर कुटिल चालें
मामला संगीन दिखता है....

चन्द रुपयों की चकाचौंधी
मूंद देती है विवेकी आँख
धुली दिखती दूध से लेकिन
पंक में डूबी हुई हर पांख

आजकल हर एक पंछी को
पींजरा रंगीन दिखता है....

तेल और पानी...

न पुरब पश्चिम एक कराओ।
वह छा जाएगा
पूरब अपना पानी राखो,
पश्चिम में मत बहाओ
वहाँ, सिर्फ सूर्यस्त होता है
सूर्योदय नहीं
सभ्यताओं का अन्त होता है,
उदय नहीं।
उदय सिर्फ मशीन बम शैतानी दिमाग का
अन्त आत्मा और ईमान का
अब भी समय है,
शैतान को शान्ति, अहिंसा,
मानवता मत सिखाओ
सिर्फ उसका प्रतिकार कर अपना पानी रखो
उसके तेल को ऊपर,
ऊपर से ही बह जाने दो,
अपने आपको समेटे उसे
खुद जल जाने दो।

क्या मुकाम पर हूँ

डॉ. आशाराणी बी.पी.

**अचानक गिर पडी नीचे मैं पंछी
धर्ति की अतुल गहराई की ओर
काटे गये पंख, पता नहीं,
क्या हुआ क्यों?**

**देखा तो रो रहे थे सब
लिपटकर मेरे शरीर से
क्या मैं बुला रही थी सब को
ना, सुना नहीं किसी ने भी
क्या, पूछ रही थी, क्यों रोते हो?**

**नहीं मिला जवाब मुझे
तुरंत कुछ लोग, बिना मेरी
अनिमति लिये, ले गये
विवस्त्र करके नहा दिया,
साज सज्जा की मेरी**

**लिया दिया, मंच पर मुझे
तभी सुनाई दिया कि मृत्यु हुई हे मेरी
एहसास हुआ शरीर से मृत हूँ,
मैं केवल आत्मा हूँ,**

**फिर भी रह गयी शंका अनजान सी
अधूरी सी एक पहेली सी
क्या मैं छोडकर जा रही हूँ जगत को।**

भारतमाता

डॉ. सुनील कुमार परीट
हिन्दी अध्यापक, सरकारी उच्च
माध्यमिक विद्यालय, लक्कुंडी ५९११०२
बैलहोंगल, बेलगाम, कर्नाटक

**भारतमाता तेरे लिए जहां मनाने आया हूँ।
बारतमाता तेरे लिए जान लुटाने आया हूँ।।**

**भारतमाता का सपूत हूँ
महिमा उसकी गाता हूँ,
स्वर्ग अब नहीं कहीं
स्वर्ग भारत में पाता हूँ**

**भारतमाता तेरे लिए धरती सजाने आया हूँ।
भारतमाता तेरे लिए जान लुटाने आया हूँ।।**

**वीर मर्दानों की लहू से
कब से पुण्यभूमि बनी तू
लोकरक्षा के हित में
हाथ में फूल लेकर खडी तू।**

**भारतमाता तेरे लिए सबको जगाने आया हूँ।
भारतमाता तेरे लिए जान लुटाने आया हूँ।।**

**चहुओर सुंदर हरियाली
सबमे भरती है तू प्राण,
तेरी महिमा है अपरम्पार
संसार की एक है तू शान।**

**भारतमाता तेरे लिए जान लुटाने आया हूँ।।
भारतमाता तेरे लिए जान लुटाने आया हूँ।।**

मध्यबिन्दु

कृष्णकुमार कनका
गाँव व जोस्ट गुँदाऊ, ठार मुरली,
नगर थाना लाइन पार,
फिरोजाबाद, उ.प्र. २८३२०३

**तुम मध्य बिन्दु मैं वृट रेखा,
हो सका न कभी मिलान सखे।
हमसे न गया भेरा अब हक,
विघना का अजब विधान सखे।**

**मैं गरल कलश तुम सुधा सिन्धु,
आलिंगन कैसे हो पाता।
मेरे नैनों के अश्रु तुम्ही,
बोलो मैं कैसे रो पाता।**

**मेरे उर की अभिलासा के,
बन सके न मिटे निशान सखे।**

**मन मयूर के अभिनन्दन में
उपवन की मलय भली होथी।
भंवरे के नेह निमनाण पर
सहसा खिल उठी फली तो धी।**

**मेरे सपनों की संध्या को,
मिल सका न कभी विहान सखे।**

**लागुन रंगीन तुम्हीं से हे,
रिम-झिम सावन तुम बिन कैसे।
चन्दा में धिपी किरन जैसे।**

**मेरे आंगन की तुलसी तुम,
दे सका न कभी प्रमाण सखे।**

**मधु लिप्त तृषा की त्रप्ति हेतु,
दिखलाओगे क्या एक झलक।
तेरे शुभ 'कनक' कलेवर को,
देखों मेरी आँखें अपलक।**

**मेरे अनसुलझे प्रश्नों को,
मिल सका न कभी निशन सखे।
हमसे न गया भेदा अब तक,
विघना का अजब विधान सखे।•**

ये भी शोध-पत्रिका के आजीवन सदस्य बने

नाम	:	**पार्वती आर** (एम.ए. एमफिल)
संपर्क	:	गंगाधरमंदिरम्, अंडूरकोणम्,
		पोत्तनकोड् - ६९५५८४, तिरुवनन्तपुरम।
फॉन	:	८१२९७९५४६४
विवाहित	:	रजित वी.की. की पत्नी
शोधविषय	:	विवेकी राय के कथासाहित्य में ग्रामीण समाज
शोधकेन्द्र	:	एम.जी.कॉलेज, केशवदासपुरम
शोधशिक्षक	:	डॉ.एस.आर.जयश्री

दीपावली की शुभकामनाएँ

नरेश हमिलपुरकर
चिटगुप्पा ५८५४१२, बीदर, कर्नाटक

दीपावली की सबको हार्दिक शुभकामनाएँ
ईश्वर करे पूरी हो सबकी सारी कामनाएँ

जग में सदा हंसी खुशी, प्रेम भाईचारा रहे
शांतिप्रगति रहे हर पल और हर दिशाएँ

निराशा दुख दर्द की साया तक न पड़े कभी
क्या कमी है यदि है सद्‌कर्म, धर्म, आशाएँ

सुबह होते होते जग उजियारा तो होगा पर
मन का घोर तम हरने सत्य की ज्योति जलाए

दया दान क्षमा से बढ़कर कोई चीज नहीं
आदमी वही जो सुख दुख दोनों को अपनाए

माता पिता की सेवा से श्रेष्ठ पूजा प्रार्थना नहीं
इनकी इच्छा पूर्ति में सारा जीवन बीत जाए

अतीत को भूलकर उज्जल भविष्य बनाए
आनंद हर्षाल्लास से हर दिन पर्व मनाए।

शुभ - दीपावली

राम कुमार वर्मा
ख्वालपारा, कालीमंदिर के पास, बौरीपारा,
अम्बिकापुर, सरगुजा छत्तीसगढ ४९७००१

दीपावली का पावन पर्व आपके सहित आपके पूरे परिवार व समाज के लिए मंगलकारी हो, इन्हीं पवित्र कामनाओं के साथ

!! एक पाती माँ के नाम !!

माता तेरा बन्दा तुझको, दूर से निहारता।
अधरो में चुप्पी साधे, पर दिल से तुझे पुकारता।।

अपने बच्चों के लिए, मुस्कान लिए तू आना माँ।
सुख, शान्ति समृद्धि का, पैगाम लिए तू आना माँ।।

हाँथ जोड़ कर खड़ा रहूँगा, जल्दी से तू आना माँ।
दीपावली का पावन पर्व, मेरे संग मनाना माँ।।

तेरे पग पड़ते ही माता, जगमग दीप जलाऊँगा।
तेरे चरणों में सर रख, मैं दीपावली मनाऊँगा।।

!! माँ का संदेशा हमारे नाम !!

यदी आप वक्त काट रहे हैं, तो वक्त आपको कभी माफ नहीं करेगा, क्योंकि आप उसको काट रहे हैं।।

इसलिए

तेरा परिश्रम, वक्त की पूजा।
उससे बड़ा, कोई न दूजा।।

ये भी शोध-पत्रिका के आजीवन सदस्य बने

नाम	: **सिंधु बी.ऐ.** (एम.ए. बि.एड्)
संपर्क	: तिरुवातिरा, इलमपल्लि, मठत्तिकोणम, वीरणकाव् पि.ओ-६९५५७२
फॉन	: ९४९५६२९३०३
विवाहित	: एस. मुरलीधरन नायर की पत्नी
प्रकाशित लेख	: बालमनोविज्ञान - एक छोटा-सा परिचय (संग्रथन)
शोध विषय	: साठोत्तरी हिन्दी उपन्यासों में बालमनोविज्ञान।
शोधकेन्द्र	: एम.जी.कॉलेज, केशवदासपुरम
शोधशिक्षक	: डॉ.उषाकुमारी

नाम	: **सुस्मिता एस.वी.** (एम.ए.,एम.फिल)
संपर्क	: विजय विलासम, अण्डूरकोणम पी.ओ., पणिमूला, पोत्तनकोड ६९५५८४
फॉन	: ०४७१-२४१९८९८, ९४००७८९८९८
विवाहित	: वी.जे.संतोषकुमार की पत्नी
प्रकाशित लेख	: मोबाइल-समाज का नायक और खलनायक (केरलज्योति)
शोध विषय	: समकालीन कहानी में मीड़िया का प्रभाव
शोधकेन्द्र	: एम.जी.कॉलेज, केशवदासपुरम
शोधशिक्षक	: डॉ.आशा एस. नायर

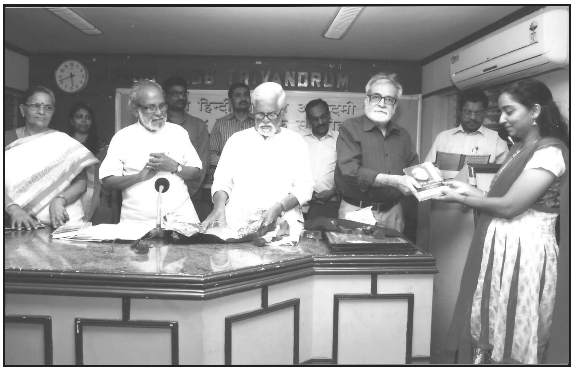

नरेन्द्र कोहिली पर रचे शोध प्रबन्ध का लोकार्पण ग्रंथकर्ती
डॉ. रीजा को एक प्रति स्वयं देते हुए नरेन्द्र कोहिली करते हैं।

सुप्रसिद्ध गान्धीनेता श्री. पी.गोपिनाथन नायर जी डॉ.एन.चन्द्रशेखरन
नायर जी के अभिनन्दन ग्रंथ का लोकार्पण करते हैं।

केरल हिन्दी साहित्य अकादमी का पुरस्कार स्वीकार करती है
डॉ. रज़िया बीगम (मद्रास)। पास खडी है डॉ. तंकमणि अम्मा।

अकादमी सम्मेलन के प्रेक्षक। डॉ.टी.पी.शंकरनकुट्टि नायर,
अड्वोकेट श्री. अय्यप्पन पिल्लै जी, एस.बी.टी. जनेरेल मानेजर आदि।

डॉ.नायर जी और पत्नी श्रीमती शारदा देवी दोनों के हाथ पकडे हुए
सुप्रसिद्ध एवं विश्व-विख्यात नर्तकी आशा शरत।
पीछे श्रीमती आशा शरत की माता प्रख्यात कलाकारी आदि।
एरनाकुलम के एक पुरस्कार सम्मेलन में।

आदरणीय महाराजा श्री. उत्राटम तिरुनाल जी को डॉ.नायर जी
स्वरचित तैलचित्र दिखा रहे हैं।

केरल के महामहिम राज्यपाल श्रीमती षीला दीक्षित जी के साथ डॉ.एन. चन्द्रशेखरन नायर जी और उनकी पुत्री श्रीमती सुनन्दा, पति और पुत्रि के साथ राज भवन में।

अकादमी का पुरस्कार डॉ. कमलम्मा जी अध्यक्ष नायर जी से स्वीकार करती है। मुख्य मेनेजर एस.बी.टी. पास खडे हैं।

वार्षिक समारोह में डॉ.टी.पि.शंकरनकुट्टि नायर डॉ.नायर जी को सुवर्णवस्त्र पहनाते हुए आदर करते हैं।

केरल हिन्दि साहित्य अकादमी का ३४ वाँ वार्षिक समारोह के सन्दर्भ में डॉ. पंडित बन्ने पुरस्कृत किये गये थे। चित्र में गाँधी नेता श्री.पी. गोपिनाथन नायर और भारत के प्रख्यात उपन्यासकार नरेन्द्र कोहली।

त्रिवेन्द्रमवाले एम.जी. कालेज में संपन्न नेशनल सेमिनार का उद्घाटन प्रसिद्ध हिन्दी साहित्यकार नरेन्द्र कोहिली और डॉ.चन्द्रशेखरन नायर दोनों मिलकर कर रहे हैं। प्रो.मणिकंठन नायर और प्रो.उषा आदि साथ खड़े हैं।

अकादमी के वार्षिक सम्मेलन में एस.बी.टी. के मुख्य मानेजर के हाथ से प्रोफसर षनमुखन और प्रोफसर लीना दोनों एस.बी.टी. साहित्य पुरस्कार स्वीकार करते हैं।

केरल हिन्दी साहित्य अकादमी के लिए शोध-पत्रिका डा.एन. चन्द्रशेखरन नायर, श्री निकेतन, तिरुवनन्तपुरम - ४
द्वारा मुद्रित संपादित और श्रीरामदासमिशन प्रिंटिंग एण्ड पब्लिशिंग हाऊस, तिरुवनन्तपुरम-८७ में मुद्रित।